श्रीहरिः

भारतकी वर्त्तमान दशा

बम्बई के प्रसिद्ध बारिस्टर मिस्टर के० ई० घमट की
"दी प्रेजेंगट स्टेट औफ इण्डिया" का
हिन्दी अनुवाद ।

पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी कृत

कलकत्ता
हिन्दी ट्रैन्सलेटिंग कम्पनी द्वारा प्रकाशित ।

नं० ६२ काटनष्ट्रीट, बी, एल, प्रेस में श्रीदक्षिणाचरण
चक्रवर्त्ती द्वारा मुद्रित ।

संवत् १९६३

पुस्तक मिलने का पता—
मैनेजर हिन्दी ट्रैन्सलेटिंग कम्पनी,
६६।८७, लोवर चितपुररोड
पो० बड़ाबाजार,
कलकत्ता।

निवेदन ।

बम्बई के सुयोग्य बारिस्टर के, ई. घमट महोदयने अंग्रेजी भाषा में "दी प्रेजेण्ट स्टेट ओफ इण्डिया" नामकी एक छोटी सी पुस्तक लिखकर इस देश में रहनेवाले अंग्रेजों के आगे पेश की थी इस नियत से कि वह लोग कृपाकर एकवार इस देश की बातों पर ध्यान दें यदि साहब लोग इसे पढ़ें तो थोड़े ही में मिस्टर घमट ने इस देश की दशा का अच्छा खाका खेंच कर दिखा दिया है। खैर वह इसे पढ़ें या न पढ़ें उनकी खुशी पर मैंने मिस्टर घमट की इस पुस्तकको इसी योग्य समझा कि इसकी बात अपने हिन्दी जाननेवाले देशबासियों को समझा दी जाय मेरी समझ में इसे पढ़ने से देश दशा सम्बन्धी मोटी मोटी सब बातें मालूम हो जाती हैं। इसीसे मैंने इसका हिन्दी में अनुवाद करना आरम्भ किया और उसका एक एक लेख भारतमित्र में प्रकाशित कराके अनुवाद समाप्त किया। हर्षका विषय है कि बहुत सज्जनो ने इसे पसन्द किया और इसके पुस्तकाकार छपवा देने के लिये अनुरोध किया। अब मैं इसे पुस्तकाकार छपवा कर उनकी आज्ञापालन करता हूं। घमट महोदय को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने मुझे इसके हिन्दी में छपने की प्रसन्नता पूर्व्वक आज्ञा दी।

अनन्त १४ }
संवत् १९६३ }

जगन्नाथप्रसाद चतुर्व्वेदी
३२ नं० आरमीनियनस्ट्रीट,
कलकत्ता।

भारत बन्दना ।

(बिहाग)

१

धन धन भारतभूमि पुनीत ।
पूरन ब्रह्म प्रगटि जहँ खायो, मांगि मांगि नवनीत ॥
जन्मभयो जहँ शिल्प कलाको, अरु साहित संगीत ।
सभ्य बने भूमण्डलवासी, सीख जहां की रीत ॥
शीत जहां बहुरङ्गी रुत है, गर्मी बर्षा शीत ।
फूट बैर की बान त्यागिकै बनहु परस्पर मीत ॥

(२)

[बन्दे मातरम् की छाया पर ।]

सोहनी ।

बन्दौं भारतभूमि सुहावन ।
सजल सफल श्यामल थल सुन्दर,
मलय बयार चलत मनभावन ॥
हिमकर निकर प्रकाशित रजनी,
कुसुमित लता ललित छबि वारी ।
दिनमनि उदित मुदित मन पच्छी,
बिकसित कमल नयन सुखकारी ॥
सात कोटि सुत जाके गर्ज्जंत,
दुगुन करन करवाल उठाये ।
कौन कहत तोहि अबला, जननी !
प्रबल प्रताप चहुं दिसि छाये ॥

धर्म्म कर्म्म अरु मर्म्म तुही है,
शक्ति मुक्ति देनी जय करनी।
तू जननी आराध्य हमारी,
बहुबल धारिनि रिपुदल दरनी॥
तू दुर्गा दस आयुध धारिनि,
तूही कमला कमल बिहारिनि।
सुखदा, बरदा, अतुला, अमला,
वानी विद्यादायिनि तारिनि॥
सुस्मित, सरला, भूषित, विमला,
धरनी, भरनी, जननी पावन।
जगन्नाथ कर जोरि बन्दत,
जय जय भारतभूमि सुहावन॥

३

[नमो हिन्दूस्थान की छाया पर]

परज

बन्दहु सब मिलि हिन्दुस्थान।
पूर्ब्ब समय को सांचो गौरव,
करि गिरा मम सुन्दर गान॥
धन, बल, बुद्धि बिपुल यश गाथा,
मगन होय सुन सभा १ महान।
बङ्ग बिहार अयोध्या गुर्ज्जर,
बम्बे उत्कल राजपुतान।

---

१ नेशनेल कांग्रेस।

सिक्ख पार्सी जैन ईसाई,
हिन्दू सेखरु मुगल पठान।
सब भाषन महँ सब मिलि गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान।
(सब मिलके) हर हर हर हर, हिन्दुस्थान!
दादर हुरमज, हिन्दुस्थान!
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान।
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान॥

एक होंय सब भारतवासी,
फूट बैर को छोड़ें बान!
रहैं परस्पर प्रेमभाव सों,
दुख सुख सब में एक समान।
बङ्ग बिहार अयोध्या गुजर,
बम्बे उत्कल राजपुतान।
सिक्ख पार्सी जैन ईसाई,
हिन्दु सेखरु मुगल पठान।
सब भाषन में सब मिलि गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान।
(सब मिलके) हरे मुरारे हिन्दुस्थान!
जय जिहोवा हिन्दुस्थान!
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान!
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान!

साहस औ उत्साह बढ़े नित,
होय उत्तेजित जनमन प्रान।

आलस निद्रा त्यागि उठहु सब,
करहु देशको अब कल्यान।
बङ्ग विहार अयोध्या गुर्जर,
बम्बे उत्कल राजपुतान।
सिक्ख पार्सी जैन इसाई,
हिन्दु सेखरु मुगल पठान।
सब भावन महँ सब मिल गावहु,
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान।
(सब मिलके) ब्रह्मरूप है हिन्दुस्थान,
अलख निरञ्जन हिन्दुस्थान।
अल्ला अकबर हिन्दुस्थान।
जय जय प्यारे हिन्दुस्थान॥

———

(Scott के Love of Country की छाया पर)

स्वदेश-प्रेम।

है ऐसो कोउ अधम मनुज जीवित जगमाहीं।
जाके मुखसों बचन कबहुं निकस्यो यह नाहीं॥ १
"जन्मभूमि अभिराम यही है मेरी प्यारी,
वारौं जापै तीन लोक की सम्पति सारी॥" २
सात समुद्दर पार विदेशन सों करि विचरन।
भयो नांहि घर चलन समय हरखित जाकोमन॥ ३
जो ऐसो कोउ होय वेगही ताकों देखो।
भलीभांति सों वाके सब लच्छन कों पेखो॥ ४

चाहै पदवी वाकी होय बहुतही भारो।
वाकी नाम बड़ो कर जानै दुनिया सारी ॥ ५
इच्छा के अनुकूल होय वाकी अगनित धन।
कविता वाके हेतु तऊ नहिं करिहैं कविगन ॥ ६
केवल स्वारथपन ही में सब समय गमायी।
मन स्वदेश हित साधन में कबहूं न लगायो ॥ ७
धरी रहत सब धन, बल, पदवी एक किनारे।
सिर पै जमकी आय बजत हैं जबहि नगारे ॥ ८
सुठि सुन्दर सुख्याति नांहि जीवन मे पैहै।
जा माटी तें बनो फेरि वामें मिलि जैहै ॥ ९
सुमरन, सोक, संगीत मरे पै कोउ न करिहै।
करमहीन हतभाग मौत दोहरी सों मरिहै ॥ १०

जगन्नाथप्रसाद।

श्रीः।

भारतकी वर्त्तमान दशा

(१)

देशी अखबारोंका निरादर।

भारतवर्षमें आजकल जो कुछ असन्तोष फैल रहा है उसके दस कारण हैं। उनमें देशी अखबारोंकी सम्मतिका निरादर ही प्रथम है। लार्ड डफरिनने कहा है—"मनुष्यों के कार्य्यव्यवहारमें मनोभाव ही प्रधान है। उसकी तरफ ध्यान न देना राजनीतिज्ञोंकी बड़ी भारी भूल है। देशको सत्यानाश करनेवाले अधिकांश युद्ध, मनोभावके उत्तेजित होनेसे हुए हैं। राजपाट धनधान्य आदिके लिये नहीं। यही नहीं बल्कि वाणिज्य भी जो सबसे सरल तथा बुद्धिमानी का काम है रीति, सम्बन्ध, चित्तवृत्ति तथा परम्परागत प्रणालीके अनुसार बहुत दिनोंतक चलता है। अंगरेज इस सिद्धान्तको कम जानते हैं।" लार्ड डफरिनने बहुत ठीक कहा है। इङ्गलैण्डके प्रधानमन्त्रीने उपनिवेशवासियोंके मनोभावके प्रभाव तथा शक्तिकी परवा न की बस अमेरिका हाथसे निकल गया। तथापि हमारे शासकगण हमारे मनोभावको ओर ध्यान नहीं देते हैं। हिन्दुस्थानमें प्रतिदिन के कार्य्यमें जितना अधिक मनोभाव प्रदर्शित होता है उतना और कहीं नहीं होता। उसका निरादर करना राज-

नीतिज्ञोंकी भूल है। उदाहरणके लिये वङ्गविच्छेदका ताजा मामला सामने है। गवर्न्मेंएटने यह वजह दिखलाकर वङ्गविच्छेद को पुष्ट किया कि बङ्गाल का शासनकार्य्य इतना बढ़ गया है कि एक लफटण्ट गवर्नर उसका प्रवन्ध अच्छी तरह नहीं कर सकता है। साथही लोगोंके चित्तमें यह जो खयाल जम रहा था कि सरकारने बङ्गभङ्ग करके बङ्गालियोंके मेलमिलाप और एकताकी जड़ खोद डाली है उसको बेजा और बनावटी कहकर उड़ा दिया। मैं गवर्न्मेंएटकी ही बात मञ्जूर करना चाहताहूं पर मैं समझता हूं बङ्गालकी हाइकोर्टने वङ्गविच्छेदको अनिष्ट तथा अधःपातका मूल बताया है। अतएव सरकारने सर्व्वसाधारणकी रायके विरुद्ध बङ्गभङ्ग कर अपनी ही हठ रखी है सो नितान्त दूषणीय है। भाषा, भाव तथा भाईपनके बन्धनसे बङ्गाली आपसमें मिलेहुए थे। उनको सरकारने अलग कर दिया। उन पर इतना अत्याचार करना उचित न था। एक गवर्नर और कौंसिल नियत करनेसे भी शासनका कार्य्य पूरा हो सकता था। बङ्गालियोंने यही प्रार्थना की थी पर सरकारने अनसुनी करदी। बस तमाम बङ्गालमें कुहराम पड़गया, असन्तोष छागया और बेचैनी फैल गई। अशान्तिकी तरङ्ग थोड़ी बहुत सारे भारतमें फैल गई है। भगवान न करे इसका कुछ बुरा फल देखनेमें आवे!

देशी समाचारपत्रोंने और सब राजनीतिक प्रश्नोंकी तरह इस पर भी देशवासियोंकी सम्मति साफ तौरसे प्रकट कर दी थी! राजनीतिक बिषयों पर देशी राय और देशी भाव प्रकट करनेमें देशी समाचारपत्र मानो फोनोग्राफ ही है। अखबारोंका गला घोटना तो क्या उनके पर कतरनेकी चेष्टा करना भी भारी भूल है। कभी कभी समाचारपत्रोंमें कुछ लचर लेख भी निकल जाते हैं। मैं यह स्वीकार करता हूं कि कुछ देशी अखबार भद्दी चीजें छापते

हैं परन्तु सौभाग्यसे ऐसे अखबार बहुत थोड़े हैं और इतने क्षुद्र हैं कि उनकी ओर ध्यान देनेकी कुछ जरूरत नहीं है। हमारे शासकोंको अखबारों पर दयाक्षमा प्रकाश करना चाहिये और याद रखना चाहिये कि देशी अखबारोंने देशका आखिर बहुत कुछ उपकार किया है और अबतक कर रहे हैं। बकौल आयर्लैण्डके प्रसिद्ध जज चीफ बैरन उल्फके—अखबारोंने सर्व्व साधारणकी सम्मतिको उत्पन्न किया पालन किया और रोचक बनाया है। अखबारोंने गवर्नमेण्टकी इच्छाएं और कार्यप्रणाली प्रजाको समझाई हैं और प्रजाके मनसे कुसंस्कारका अंधेरा दूर किया है। प्रजाके उद्देश्य, अभिप्राय तथा उच्चाभिलाषाएं सरकार पर प्रकट की हैं। यह देशवृत्तान्तका विशुद्ध झरना है। चाहे यह कहीं गदला भी होजाय तोभी गवर्म्मेण्टको इसकी धार कानूनकी मेड़से रोकनेके बदले सदा बहने देना चाहिये। मैं यहां एक घटनाका वर्णन करता हूं जिसका मेरे दिल पर बड़ा जबरदस्त असर हुआ था। जिन दिनों तिलक महोदय पर प्रसिद्ध राज-विद्रोहका अभियोग चल रहा था, मैं कार्यवश एक दिन एक ष्टेशन पर गया। गाड़ीके आनेका समय था भिन्नभिन्न देशोंके मुसाफिरोंकी भीड़ थी। कुछ लोग बेञ्चपर बैठे थे और कुछ लोग गचपर उकड़ू। एक सज्जन सरकारपर अपरिमित दोषारोपण कर रहे थे। श्रोता लोग वचन, सङ्केत तथा भ्रूकुटीभङ्गीसे अपनी अपनी प्रसन्नता प्रगट कर रहे थे। मैं पास ही दूसरे बेञ्चपर था। वह मजेसे बातें कर रहे थे। मेरा रहना उन्हें जरा भी न खटका। पर एक अंगरेजके आते ही उन लोगोंका सुर बदल गया। मैं समझता हूं वह लोग डर गये। उन दिनों यह खबर उड़ रही थी कि सरकारकी तरफसे जासूस फिरते हैं।

ऊपरकी घटना यह बतलाती है कि प्रजाको गुप्त रूपसे अपना

भाव प्रकाश करनेके बदले खुले तौरसे प्रकट करने देना चाहिये। अखबारोंके मुंह बन्द करने या प्रजाकी जबान पकड़नेका ही फल राजनीतिक षड़यन्त्र और गुप्तसन्धि है। भगवान हिन्दुस्थानको सदा इन पापोंसे बचावे!

अब कुछ बातें ऐंगलो इण्डियन समाचारपत्रोंके बारेमें कहता हूं। उनका प्रबन्ध चाहे कैसा ही सुन्दर हो पर भारतकी प्रजाका सच्चा हाल वह भली भांति कभी नहीं प्रगट करते। इन गोरे अखबारोंके सम्पादक विलायती होते हैं। वह हिन्दुस्थानकी रीतिनीतिसे पूरे अनजान रहते हैं। उनकी दुनियाही निराली है। वह गोरी समाजसेही हिन्दुस्थानी भावविचार सीखते हैं। अपने समाजके घेरेसे बाहर निकलना उनके लिये जरा टेढ़ी खीर है। हां, एक बात वह कर सकते हैं और वह उन्हें करना चाहिये। उन्हें अपने अखबारोंमें हिन्दुस्थानियोंके लेख प्रकाशित करनेके लिये जरा अधिक मुस्तैद होना चाहिये। मुझे दुःखसे कहना पड़ता है कि कुछ गोरे सम्पादक उन लेखोंको नहीं छापते हैं जिनमें उनके विचारके विरुद्ध बातें होती हैं। वर्णभेदके अनुसार हिन्दुस्थानमें अखबार चलाना बड़ा दूषित काम है। राजकर्मचारीगण गोरे अखबार ही पढ़ते हैं। इस वास्ते उनमें हिन्दुस्थानियोंके आर्टिकल छपें तो वह सहज ही उनपर गौर कर सकते हैं। गोरे अखबार अगर उदारता उच्चविचार तथा सूक्ष्मदर्शितासे काम लें तो अपने अनुपम पदके कारण सामयिक विषयों पर सुन्दर प्रभाव डालकर बड़ा उपकार कर सकते हैं।

(२)

देशियोंके साथ अशिष्टता।

असन्तोषकी दूसरा कारण देशी लोगोंके साथ गोरोंका अशिष्ट व्यवहार तथा उनपर घृणा करना है। इङ्गलैण्ड निवासी अंग्रे-

जोंका प्रसिद्ध विलायती अहङ्कार और बात है और यहांके गोरोंकी दाम्भिकता और बात है। देशियोंके साथ गोरोंका अशिष्ट तथा असभ्य व्यवहार देखकर मुझे बड़ा दुःख होता है। देशी लोगोंको "निगर" यानी काला कहना तो एक मामूली बात है। काले रङ्गके कारण अगर वह "काले" कहलाते तो बुरा न लगता। क्योंकि देशी लोग न गोरे होनेमें कुछ इज्जत समझते हैं और न काले होनेसे बेइज्जती। कोयलेसे काले अफ्रिकाके हबशी और बर्फके समान उजले अंगरेज दोनों ही मनुष्य हैं। दोनोंको एक ही परमात्माने बनाया है। इस विषयमें भारतवासी निश्चयही ईसा मसीहके उपदेशानुसार चलते हैं। लेकिन बुरा इसलिये मानते हैं कि यह विशेषण गुलाम और छोटेके अर्थमें दिल्लगीके तौरपर व्यवहार किया जाता है।

अब दूसरा उदाहरण लीजिये। पहले दरजेकी गाड़ियोंमें तथा रेलवे प्लाटफार्म पर गोरों और देशी लोगोंमें जो अनुचित मुठभेड़ तथा धींगा मुश्ती हो जाती है उसे कौन नहीं जानता है? पहले दरजेके मुसाफिर अधिकतर शिक्षित और सभ्य होते हैं। गोरे उनको गाड़ियोंमें घुसने नहीं देते और घुस जानेपर उनसे छेड़छाड़ करते हैं। यह बात उन्हें बहुत बुरी लगती है। दोनों दलोंमें प्रायः हाथापाई और गालीगुफ्ता हो जाती है और कभी अधिक मारपीटकी भी नौबत पहुंच जाती है। इन मौकों पर गोरे लोग जो रङ्ग बदलते हैं उससे दोनों जातियोंमें मेलमिलाप बढ़नेका कोई ढङ्ग दिखलाई नहीं पड़ता। मैं यह अवश्य कहूंगा कि कुछ गोरे मुसाफिर बड़े नेक, मिलनसार, और मेहरबान होते हैं। वह अपने साथी मुसाफिरको ऐसा आनन्द देते हैं जैसा इङ्गलैण्डमें मिलता है।

यह बात तो सबको मालूम है कि तीसरे दरजेके मुसाफिरों-

को अकसर बड़ी फजीहत होती है। यद्यपि रेलवे कम्पनियों के पेटको ज्यादे वही भरते हैं तथापि वह भेड़ बकरियोंकी बराबर समझे जाते हैं। अगर वह किसी गोरे या अधगोरे रेलवे कर्म्मचारीसे कुछ दरियाफ्त करते हैं तो झिड़कियां खाते हैं। गोरे और अधगोरे मुसाफिर उसी कर्म्मचारीसे कुछ पूछते हैं तो उनकी बातोंका जवाब बड़े ध्यान और नम्रतासे दिया जाता है।

चौथा उदाहरण तो रोजकी घटना है। गोरे कोचवान राह चलतोंको सूअरकी पदवी प्रदान करते हैं और उनपर चाबुक फटकारते है। अपराध उन बेचारोंका यही है कि हुक्मके साथही वह राह छोड़कर हट नहीं जाते। क्या यह बड़ा भारी अपराध है? इन कोचवानोंको उन बेचारोंके साथ इस तरहके बुरे बर्ताव करनेका क्या अधिकार है? वह राज्यकी प्रजा हैं और राजपथ पर चलते हैं। हां, अपनी अनाड़ी चालके कारण कभी कभी वह कुछ तकलीफ दे बैठते हैं।

मैंने एक दिन कुरला स्टेशनके अहातेके बाहर द्वितीय श्रेणीके मजिस्ट्रेटकी कचहरीके पास ही देखा कि एक अंगरेज अदना बातके लिये गुस्से तानकर एक बेचारे देशी मनुष्यको बेतरह कोस रहा है। पुलिसका एक आदमी वहीं खड़ा था। वह देशी उसकी दुहाई देता था पर वह कुछ न बोला। लोगोंकी भीड़ लग गई थी लोग "जुल्म जुल्म" चिल्लाते थे। मैंने मजिस्ट्रेटके पास दरखास्त देनेकी सलाह उसे दी और कहा कि तेरी तरफसे मैं गवाही भी दे दूंगा पर वह राजी नहीं हुआ। उसने कहा कि काले बनाम गोरेके मुकदमेमें अंगरेज लोग न्याय ताक पर रख देते हैं। मैंने उसका भ्रम मिटानेकी चेष्टा की पर कुछ फल नहीं हुआ। वह मेरी जान पहचानका था। वह बेचारा एक पठानकी गोली खाकर सदाके लिये सो गया।

अब जिस बातका मैं वर्णन करता हूं उससे भारतके शिक्षित लोगोंका जी बराबर जला और कुढ़ा करता है। यह जिल्लत अकसर पबलिक कामोंमें अथवा हाकिमोंकी मुलाकातोंमें उठानी पड़ती है। भारतवासियोंको सरकारी अफसरोंके दरवाजे पर मुलाकात की उम्मीदवारीमें कभी कभी घण्टों सिर टकराना पड़ता हैं। पद मर्यादा तथा शिष्टाचारके अनुरोधसे कुर्सी पानेके अधिकारी होने पर भी उन बेचारोंको बहुधा कुर्सियां नहीं मिलती हैं। कभी बड़े बेहूदापन तथा रुखाईसे हाकिम लोग उनसे बातचीत करते हैं। यह सब बातें बहुत खटकती हैं। एक साधारण मनुष्यकी अपेक्षा राजकर्म्मचारीके हाथसे अपमानित होना अधिक असह्य है और जब इन मौकों पर गोरोंकी खातिर होती है तब जी और भी जल उठता है। अफसर लोग काले गोरेका ख्याल न कर समान रुखाई दिखावें तो शायद लोग उतना बुरा न मानें।

मुझे याद है एक मुकद्दमेमें एक अदना अधगोरा गवाह था। मुफस्सिलके एक गोरे मजिष्ट्रेटने उसे कुर्सी दी थी और उसने बैठकर इजहार दिया था। बीमारी या ऐसा कोई वाजिब सबब उसको कुर्सी देनेका न था। सिर्फ गोरे चमड़ेने उसे कुर्सी दिलाई थी। मुझे विश्वास है कि ऐसे मौकेपर उससे बढ़कर इज्जतदार देशीको वह मजिष्ट्रेट कभी कुर्सी न देता। यह मैं इससे कहता हूं कि मुझे उसके इजलास पर जानेका कई बार मौका पड़ा है।

सरकारी तथा रेलवेके अफसर लोग पत्रव्यवहारमें इज्जतदार देशी लोगोंके नामोंके साथ मिष्टर या स्क्वैर नहीं लिखते। युरोपियन या युरेशियनके नामके साथ जरूर लिखेंगे चाहे वह खानसामा क्यों न हो।

अब विशेष उदाहरणकी जरूरत नहीं है। गोरे लोग छापा

कर याद रखें कि वह लोग गवर्न्मेंटके अङ्ग हैं। भारतवासी उनको ऐसाही समझते हैं। साहबोंको वह सरकारहीका स्वरूप मानते हैं। इसलिये कोई कुसूर चाहे सब गोरे करें या एक करे—खुलके करें या छिपके उसका कलङ्क सरकारहीके मत्थे मढ़ा जायगा। भारतवर्षमें इटिशराज्यका यश अपयश कुछ कुछ उन्हींके हाथ है। जिनका राजपाट जाता है उनका मिजाज कम-जोर हो ही जाता है। इसलिये उनकी तुनकमिजाजीकी तरफ ज्यादे ख्याल नहीं किया जा सकता। भारतवासियों पर कृपा तथा धीरता का व्यवहार करनेसे सब समय लाभ अधिक और हानि कम होगी। "मीठी बात मधुमक्खीके छत्तेकी बराबर है। वह मनको सन्तुष्ट तथा शरीरको पुष्ट करती है।" भारत-वासियोंका हृदय कृतज्ञता प्रकाश करनेके लिये सदा तैयार रहता है। दया, प्रेम तथा सहानुभूति उनके हृदयमें सदा विराजती है। यह भी याद रखनेकी बात है कि अंगरेजी शिक्षाके फलस्वरूप शिक्षित भारतवासी लोग बड़े बुद्धिमान और सूक्ष्मदर्शी होते हैं। यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि ईमानदारीसे मुकाबला हो तो भारतवासी अंगरेजोंको जब कहो हरा दें। वह अपनी पवित्र परम्परागत बातों तथा सभ्यता को बहुत प्रेमसे स्मरण रखते हैं। लेकिन क्या करें भाग्यके फेरमें पड़ गये हैं। भारतवासी सभ्यतामें उस समय भी बहुत चढ़े बढ़े थे जब कि अंगरेज लोग अन्धेरेमें टटोलते थे। ईसामसीहने उपदेश किया है कि मनुष्यको नम्र, दान-शील तथा शिष्ट होना चाहिये। याद रहे वह भी एशियाही का था।

(२)

विचारालयोंमें वर्णभेद।

असन्तोषका तीसरा कारण काले गोरोंका भेद है जो न्याय तथा धर्मको तिलांजलि देकर अदालतोंमें दिखलाया जाता है।

यह विषय नाजुक है। इसके छेड़नेमें पुरानी कड़वी बातें याद करानी पड़ेगी। अच्छा होता यह विषय मैं छोड़ देता। पर भली भांति विचारनेपर मालूम हुआ कि जो बात प्रजामें क्रोध तथा अप्रसन्नता फैलानेकी जड़ है उसे छोड़ देना इस लेखका उद्देश्य भ्रष्ट करना है। खैर यह विषय बड़ी नर्मी और दबी जुबानसे कहनेकी चेष्टा की जायगी। यह बड़े दुःखका विषय है कि बहुतेरे ऐङ्गलो इण्डियन जज तथा मजिष्ट्रेट देशी गवाहोंकी अपेक्षा युरोपियन गवाहोंका अधिक विश्वास करते हैं। देशी लोगोंकी शिक्षा तथा मर्यादाका कुछ भी ख्याल नहीं करते। उनकी गवाही जांचनेके लिये और और तरीके खुले तौरसे काममें लाये जाते हैं। शिक्षित भारतवासी इस भेदको अनुचित अनादर समझ कर बहुत बुरा मानते हैं। परिणाम यह होता है कि वह इस अपमानसे बचनेके हेतु अदालतमें गवाही देनेसे जी चुराते हैं खास कर उस दशामें जब कोई गोरा भी उस मुकद्दमेमें साक्षी होता है। ऐङ्गलो इण्डियन या संसारके और लोग जितने सच्चे और ईमानदार हैं भारतवासी भी उतनेही हैं। वह कटहरेमें खड़े होकर झूठ बोलनेकी खराबी जानते हैं और जान सकते हैं। लिखेपढ़े भारतवासियोंमें दो चार कुलाङ्गार हो सकते है लेकिन गोरोंमें ऐसे लोगोंकी कमी नहीं है। गवाहोंकी पहचान कानूनकी कसौटीसे होनी चाहिये, चमड़ेके रङ्गसे नहीं। इससे प्रायः बड़ा अन्याय हो जाता है।

इससे बढ़कर है गोरोंके मामलोंमें ऐङ्गलो इण्डियन मजिष्ट्रेटों तथा जूरियोंका पक्षपात। जिस अभियोगमें कोई युरोपियन फरयादी और देशी असामी होता है उसमें अकसर युरोपियनहीकी जीत होती है और देशी बेचारेको एक बड़ी आफतसे मुकाबला करना पड़ता है। अगर कहीं वह कुसूरवार साबित हुआ तो

उसको बड़ी कड़ी सज़ा होती है। अगर फरयादी भी देशी हो तो उतनी सज़ा नहीं होती है। विरुद्ध इसके अगर युरोपियन असामी हो तो अभियुक्त होनेसे उसके मुक्त होनेकी अधिक सम्भावना रहती है। अगर दण्ड भी कुछ हुआ तो देशियोंकी अपेक्षा बहुत हलका। सबके साथ समान न्याय होना चाहिये इसकी पुकार है। भारतवासी कहते हैं कि गोरे अभियुक्तों पर जो बेमुनासिब नरमी तथा रहम दिखाया जाता है उससे वह लोग कानूनकी कुछ परवा न कर मनमाना जुल्म देशियों पर कर बैठते हैं। कभी कभी अन्यायकी पुकार बेजड़ होती है पर यह कोई इनकार नहीं कर कर सकता कि अधिकांश पुकार सच्ची होती है झूठी नहीं। फौजदारी मुकदमेके कागजपत्रोंमें इसके बहुतेरे प्रमाण मिलते हैं। स्वाधीन चित्तवाले जज ऐङ्गलो इण्डियन जूरियोंके असंगत पक्षपात के कारण प्रायः अपना कर्त्तव्य भली भांति पालन नहीं कर सकते हैं। जूरी होनेके समय वह लोग बाइबल चूमकर शपथ करते हैं—"सम्राट और असामीमें जो मुकद्दमा चल रहा है उसमें अच्छी तरह न्यायसे विचार कर सबूतके मुताबिक हम अपनी राय जाहिर करेंगे। ईश्वर हमारी सहायता करे।" पर शपथका कुछ फल नहीं होता। वह सहजमें टूट जाती है। राजा अपराधियोंको दण्ड देनेका अभिलाषी है। शपथका तोड़ना अपने उस कर्त्तव्यसे मुहमोड़ना है जो सम्राटके प्रति ऐङ्गलो इण्डियन तथा भारतवासियोंको करना चाहिये। अपनी इज्जत कायम रखनेके लिये वह राजनियम क्या ईश्वरका नियम भी तोड़ डालते हैं। इस प्रपञ्च में पड़कर ऐङ्गलो इण्डियन सच्ची राहसे बहुत बार भटक चुके हैं। अगर यह झूठा प्रपञ्च छोड़कर निष्पक्ष भावसे भारतवासियों तथा अपने भाईबन्दोंके साथ केवल न्यायका बर्त्ताव करें तो अंगरेज जातिका गौरव सौ गुना हो जाय

और भारतवासियोंकी आंखोंमें अङ्गरेजोंका भी बहुत कुछ आदर बढ़ जाय। हिन्दुस्थानमें न्यायही ब्रटिश राज्यकी जड़ है। देखना यह हिलने या बिगड़ने न पावे। शायद गोरे जूरी और मजिष्ट्रेट लोग अपने उन भाईबन्दोंको भारतमें अप्रसन्न करनेसे डरते हैं जो किसी देशीके ऊपर बेकानूनी काररवाई करनेके लिये गोरोंको सजा दिलाना नहीं चाहते हैं। उनसे मेरा कथन है "डरो मत अपना कर्त्तव्य पालन करो।" सर जेम्स मेकिनटोश एक बड़े नामी वकील गत शताब्दीके प्रारम्भमें बम्बईके 'रिकोरडर' थे। उस समय सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट न थी। ऐङ्गलो इण्डियन समाज उस समय बहुत छोटी थी और एक गोरेको अभियुक्त करनेके लिये जजको कुछ साहस दरकार था। तौ भी सर जेम्सने उस समयके बम्बईके कस्टम मास्टरको कानूनके विरुद्ध या नजर इनामके बतौर रुपये लेनेके कारण अभियुक्त किया था। गोरी समाज इसपर बहुत नाराज हुई थी। पर सर जेम्स डटे रहे। इसके बाद उन्होंने अपने एक मित्रको लिखा था। "बड़ी बुरी तरह मेरे साथ लोग पेश आये। मेरी तरफदारी करनेकी उदारता किसीमें न थी और न सरकारहीमें इतना जोर था कि न्याय करनेके लिये मेरी जो नामाकूल मलामत होती थी उसे दबा देती।" सचमुच सर जेम्स ने ब्रटिश जातिके योग्य साहस दिखलाया था।

न्यायप्रियता अङ्गरेजोंकी नसनसमें भरी है। यही उनका गौरव है। इसीसे उनका समुद्रवेष्टित द्वीप बलवान हुआ। मध्ययुगमें भी न्यायप्रियता थी। प्रिन्स हेनरीने जजसे अपने एक साथीको छोड़ देनेके लिये कहा। उसने इनकार किया तो प्रिन्स तलवार खेंचकर उसपर झपटा था। इसपर जस्टिस गेसकोनेने फौरन उसे कैदकी सजा दी। क्रोधान्ध होने पर भी प्रिंसने दण्ड को स्वीकार किया था। जब प्रिंसके पिता चतुर्थ सर हेनरीको इस

घटनाका समाचार पहुंचा तो वह आनन्दसे बोल उठा "धन्य है वह राजा जिसके यहां ऐसा दृढ़कर्त्तव्यपरायण जज है और कानूनको माननेवाला ऐसा पुत्र।" हमारे गोरे जज गैसगोर्नका तथा गोरे लोग महाराज हेनरी और प्रिंसका अनुकरण करें। कुछ लोगोंको यह जो विश्वास जम रहा हैं कि अङ्गरेजी राज्यमें बाघ और बकरी एक घाटमें पानी पीते हैं उसे घटानेके बदले बढ़ने देना चाहिये। तमाम लोगोंमें इसका प्रचार होना चाहिये। सब लोगोंकी कहावत हो "न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।"

(४)

हाईकोर्टोंका अङ्गभङ्ग।

असन्तोषका चौथा कारण बहुत बड़ा है। समस्त भारतवासियोंको यह आशङ्का होगई है कि गवर्न्मेंएट हाइकोर्टकी शक्ति घटानेके लिये बड़ी उत्कण्ठित है। लोग कहते हैं कि गवर्न्मेंएट इस दहानेको बहुत तङ्ग समझ कर अलग फेंकना नहीं तो ढीला करना जरूर चाहती है। कुछ लोग कहते हैं कि अगर सरकार की शक्ति होती तो हाइकोर्टोंको घटाकर जिला कोर्ट बना डालती और जजोंको शतरञ्जका प्यादा। बस हिन्दुस्थानकी बहुमूल्य बिसात पर मात होनेका डर छोड़के बेखटके शतरञ्ज खेलनेका आनन्द लेती। सरकार की शानमें ऐसी बात कहना जरा अनुचित है और इसमें कुछ अनुदारता भी है। चाहे जो कुछ सरकारके विरुद्ध कहो पर वह बेशक उदार और हितैषी है। परन्तु मैं समझता हूं कि हाइकोर्टोंकी शक्ति देखकर सरकारकी ईर्षा दिन दिन बढ़ती जाती है। वह हाइकोर्टोंकी शक्ति परिमित किया चाहती है। हाइकोर्टकी शक्ति तथा महत्व पर लोगोंका जो विश्वास जम रहा है उसे डिगाना अंगरेजी राज्यके लिये हिन्दुस्थानमें बुरा समय बुलाना है। सब लोग हाइकोर्टको अपनी

स्वाधीनताका मन्दिर, अपनी रक्षाका आश्रयस्थान अपनी शक्तिका दुर्ग और अपने अधिकारोंका निकेतन समझते हैं। लार्ड कर्जनने विलायत जानेके समय अपनी बायकल्लाक्लबवाली स्पीचमें कहा था "भारतका कृषक राजनीति नहीं समझता और न कूटनीति (पालिसी) जानता है।" यही सही पर अपने अधिकारोंको हाइ-कोर्टको निश्चय जानता है। कम्पासकी सूई जैसे उत्तरकी तरफ घूमती है अथवा मरनेके समय ऊंटका सिर जैसे मारवाड़को तरफ घूम जाता है वैसेही आफत विपदकी घड़ीमें वह हाइकोर्टकी तरफ बड़ी आशासे दौड़ता है। जब किसी मजिष्ट्रेट कलक्टर या हाकिमसे खटक जाती है तो वह फौरन हाइकोर्टका स्मरण करता है लेकिन यह सुनकर कि हाइकोर्टको इसमें दखल देनेका इख़ति-यार नहीं है वह उदास हो जाता है उसे इसपर विश्वास नहीं होता क्योंकि वह हाइकोर्टको सर्वशक्तिसम्पन्न समझता है। सचमुच यह भारतका जहाज अंगरेजी राज्यकी बन्दरगाहमें हाइकोर्टकी जञ्जीरसे मजबूत बंधा हुआ है। भारतमें हाइकोर्ट अङ्गरेजी शासन की सांस लेनेकी नाली है। उसे कानूनकी गिल्टीसे रोकना या बन्द करना ठीक नहीं। ऐसा करनेसे विपदका डर है। उदाहरणके लिये हालकी एक घटनाका उल्लेख करता हूं। प्रायः दो वर्ष हुए तिलक महोदय पर [illegible]लफोका मुकद्दमा पूने में चलाया गया था। इसकी जांचके लिये एक विशेष मजिष्ट्रेट नियत होनेके कारण सब भारतवासियोंने यहांतक कि जो लोग राजनैतिक विषयों में तिलक महोदयके विरुद्ध थे उन्होंने भी उनके साथ सहा-नुभूति प्रगट की थी। एक साधारण अपराधकेलिये विशेष मजिष्ट्रेट नियत करना तथा प्रजाका बहुतसा रुपया खर्च कर बम्बईसे बारिष्टर भेजना गवर्न्मेण्टकी जरा नादानी जाहिर करता है। पर मुझे इससे कुछ मतलब नहीं। मुझे तो केवल यही दिख-

लाना है कि इससे प्रजाके चित्तमें भयका सञ्चार होगया और सरकारकी नीयत पर शक होगया है। सिरतोड़ परिश्रमके बाद तिलक महोदय दण्डित हुए। पूनेके सेशन जजने दण्ड कुछ कम कर दिया परन्तु हाइकोर्टकी शरण जाने पर माननीय चीफ जस्टिस लारेन्स जेनकिन्स तथा माननीय जस्टिस बेटीने तिलक महोदयको मुक्त कर दिया। यह खबर जङ्गली आगकी तरह तमाम फैल गई। अङ्गरेजी न्यायकी जय जयकार होने लगी। लोगोंको अपार आनन्द हुआ। बम्बईकी हाइकोर्टकी बड़ी प्रशंसा हुई। सर लारेन्स बड़े अच्छे, मिलनसार तथा उच्च श्रेणीके जज हैं। उन्होंने अपनी न्यायचातुरी, उदारता तथा दयासे अपने प्रान्तकी प्रजाका मन मोह लिया है।

हाइकोर्टके जजोंको हवाकी तरह स्वतन्त्र होना चाहिये। भारत गवर्नमेण्टके अधीन किसी बातमें न होना चाहिये। मुझे विश्वास है कि सुप्रीमकोर्टके जज इस विषयमें अधिक स्वतन्त्र होते थे। बम्बईके गवर्नर सर जोन मलकोलम और सुप्रीमकोर्टके जज सर जान पीटर ग्रांटकी तकरारको कौन नहीं जानता? उस समय सुप्रीमकोर्टके जज अकेले सर जान पीटर ग्राण्ट ही थे। उनके दोनों साथी जज गन्दी बीमारीसे जो उस समय बम्बईमें फैली हुई थी मर गये थे। सर [illegible] ग्राण्टने मुफस्सिलके एक आदमीको जेलखानेसे अदालत में हाजिर करनेके लिये सरकारपर परवाना निकाल दिया था। सरजान मलकोलमने यह कहकर परवानेकी तामील नहीं होने दी कि सुप्रीमकोर्टको ऐसा करनेका इखतियार नहीं है। इसपर सर पीटर ग्राण्ट नाराज हुए। उन्होंने कई दिनों तक अदालत बन्द करके इसके विरोधमें एक लेख तैयार किया। उसमें एक जगह लिखा है—"इन दीवारोंके अन्दर परमेश्वर और सम्राटके सिवा मुझसे बड़ा या मेरे बराबर कोई नहीं

है।" बम्बई हाइकोर्टके सेशन घरमें आपकी सुन्दर तसवीर लटकती है जो सर्वसाधारणके चन्दे से बनी है। उसके नीचे लिखा है— "इसे देखकर सब भारतवासी अपने हितैषी तथा मित्रका स्मरण करेंगे।" मैं यह नहीं कहा चाहता कि सर पीटरने उचित किया या अनुचित पर विनय यह है कि भारतको हाइकोर्टके कमरोंमें उनके कथित शब्द सदा गूंजते रहें।

हाइकोर्टके जजोंका एकजीक्यूटिव कौंसिलकी मेम्बरी पानेके लिये इच्छा करना अनुचित है कहनेमें कुछ हर्ज नहीं। मिस्टर बेजहोटने अपनी अङ्गरेजी आईनकी किताबमें कहा है—"यह जरूरी बात है कि जजोंके आगे किसी प्रकारका प्रलोभन न होना चाहिये।" सिविलियन जजोंका मैं बहुत आदर करता हूं लेकिन उनको किसी तरहका लोभ न दिखाया जाय तो अच्छा है। लोगोंको कहते सुना है कि मिस्टर जस्टिस जारडीन गवर्मेंटको समालोचना निर्भय होकर करते थे इसी लिये बम्बईकी एकजीक्यूटिव कौन्सिलके मेम्बर नहीं होने पाये।

हाइकोर्टकी शक्ति बड़ी और दमदार होनी चाहिये। हरेक कठिनाई की दवा जरूर होनी चाहिये लेकिन डाक्टर जज हो सरकारका माली अफसर नहीं। आजकलके कानूनका रङ्गढङ्ग लेकिन उलटा है। मुफस्सिलके जजोंके यथेच्छाचार तथा क्षुद्रताकी रोक हाइकोर्ट है। जबतक हिन्दुस्थानमें न्याय और शासनका बेजोड़ मेल रहेगा तबतक फौजदारी मुकद्दमोंका पहिया अच्छी तरह नहीं चलेगा और मुफस्सिलवालोंको बड़ी कठिनाई झेलनी पड़ेगी। मालके अफसर लोग फौजदारी मुकद्दमोंकी अपेक्षा मालके कामोंकी तरफ अधिक ध्यान देते हैं। बड़ी जल्दी तथा बेपरवाईसे अकसर मुकद्दमोंको फैसल कर देते हैं। वह सोचते हैं कि हमारी उन्नति तो माली कामोंमें योग्यता दिखानेसे होगी। मैं नहीं

जानता यह सोचना उनका ठीक है या गलत। सिवा इसके मुफ़स्सिलके मजिस्ट्रेट प्रायः सब अयोग्य होते हैं, जिसे इन लोगोंसे ज़रा भी काम पड़ा है वह इस बातकी गवाही देगा। इन लोगोंकी नादानी और भूलें देखकर आश्चर्य होता है। छोटे दरजेके मजिस्ट्रेटोंकी हालत और भी गईबीती है। यह लोग मजिस्ट्रेट तथा असिस्टेण्ट मजिस्ट्रेटोंके पुराने क्लर्कों (मुहर्रिर) के सिवा और कुछ नहीं हैं जिन्हें कानूनका ज्ञान थोड़ासाही होता है। इनकी पदोन्नतिका ढङ्ग भी निराला है। इसीसे न्यायका काम अच्छा नहीं होता। ख्याल कीजिये कि एक आदमी ८०) महीना पाता है। उसे प्रजाको छः महीनेकी कैद और २००) जुर्माना करनेका अधिकार एक दम दे दिया गया। यह सुनकर सबका जी दहल सकता है। हाइकोर्टको अपने अधीन मजिस्ट्रेटोंकी आज्ञाओंकी समालोचना करनेका अधिकार है परन्तु दुःखका विषय है कि वह उसे काममें लानेसे अक्सर जी चुराती है अगर वह ऐसा न करती तो बहुतसी नई बातें प्रगट होजातीं। जिलोंके वकील मुखतार अपने अपने मजिस्ट्रेटोंकी बहुतसी बातें जानते हैं पर रोजी मारी जाने तथा अपने पीछे भिड़ोंका छत्ता बना लेनेके डरसे चूं तक नहीं कर सकते। खैर तो भी घोर अन्यायकी अनेक बातें वह बता सकते हैं। हाइकोर्ट चाहे कितनी ही सावधानी करे पर वह अन्यायकी जड़ काट नहीं सकती न्याय तथा शासनकार्य्य एक मनुष्यके हाथमें रहना बड़ा हानिकारक है। इससे एकही मनुष्य न्यायकरनेवाला तथा अभियोगचलानेवाला हो जाता है। केवल नामहीको नहीं बल्कि कामको भी। अच्छे ऐङ्ग्लोइण्डियन तथा भारतवासी दोनोंही इस प्रथाका दोष दिखा चुके हैं सरकार ने न्याय और शासनको पृथक करनेकी बात मेरी समझ में अधिक व्ययका बहाना दिखला कर ताक पर रख दी।

लेकिन अब वह बहानाबाजी चल नहीं सकती क्योंकि इधर पिछले कई वर्षों में लगातार अच्छी बचत हुई है। न्याय और शासन अलग अलग न करनेका सबब शायद हाकिमों की इज्जत बनाये रखना है। यहां भी इज्जतने आकर टांग अड़ा दी। क्या कोई गोरा वीर इस इज्जत चुड़ैलको कतल नहीं कर सकता है ?

---

(५)

बड़ी बड़ी नौकरियोंसे बञ्चित किया जाना।

पांचवां कारण बड़ी बड़ी सरकारी नौकरियोंसे भारतवासियोंको बञ्चित करना है। कतिपय भारतीय राजनीतिज्ञोंने गवर्नमेण्टको खूब निन्दा करते हुए इस विषय पर लम्बी चौड़ी स्पीचें झाड़ी हैं। पर ज्यादे आदमियों ने उनकी राय पसन्द नहीं की। समय के अनुसार सरकारी कामोंमें अङ्गरेजों की बहुत जरूरत है बिना उनके काम चल नहीं सकता। समझदार भारतवासी इस बातसे अप्रसन्न नहीं हैं। परन्तु नौकरी देनेमें न्यायसे भी कुछ काम लेना चाहिये। भारतगवर्नमेण्ट के ता० २४ मई १८०४ ई० के रिजोल्यूशनमें लार्ड कर्जनने कहा था—"हर साल भारतवासियोंको सरकारी नौकरियां अधिक मिलती हैं और और अङ्गरेजों को कम। गवर्नमेण्ट कैसी ईमानदारी तथा सचाईसे अपने वचनोंको पूरा करती है। देशियोंको, नौकरियां नहीं देनेका जो दोष सरकार पर लगाया जाता है सो बिलकुल असत्य है।" कर्जन महोदय और फरमाते हैं—"यह सत्य नहीं है कि सरकारने किसी जाति वा समाजके लाभके लिये अपनी अभिभावकता व्यर्थ खर्च कर दी है। विरुद्ध इसके शासनप्रणालीके सुप्रबन्ध की उन्नति होनेके कारण नये नये पदोंकी सृष्टि हुई

है जिनपर सब समाजके लोगोंको निष्पक्ष भावसे नियत करनेकी चेष्टा बराबर कीगई है।" माननीय गोखले महोदयने १९०५ ईस्वीके मार्चमें अपनी बड़े लाटकी कौंसिलवाली स्पीचमें लार्ड कर्जनके उक्त कथनकी कलई खोल दी है। उन्होंने बड़ी सावधानीसे एक तालिका तैयार की है जिससे सरकारी बड़ी बड़ी नौकरियां कितनी अङ्गरेजोंको और कितनी भारतवासियोंको मिली हैं इसका पता लग जाता है। वह तालिका आगे परिशिष्ट में मिलेगी। उसके अनुसार मक्खन अङ्गरेजोंको और छाछ देशियोंको मिलती है। ऐसा नहीं होना चाहिये। भारतके भूतपूर्व सचिव लार्ड जार्ज हमिल्टनने एक बार एक सभामें कहा था—"भारतवर्षमें हमसे अधिक नहीं तो हमारे समान बुद्धिमान एक करोड़ मनुष्य हैं और उत्तर भारतमें अच्छेसे अच्छे अङ्गरेजोंके समान उतनेही शूरवीर हैं।" भारतकी तरफदारी करनेमें हमिल्टन साहबका नाम नहीं है लेकिन उन्होंने बात मेरी समझमें बहुत ठीक कही है। भला ऐसे बड़े बड़े बुद्धिमान लोग अपने देशकी राजसेवासे वञ्चित किये जायं तो वह खुशीसे कैसे सहन कर सकते हैं? शिक्षित भारतवासियोंको तुच्छ समझनेकी एक चाल चल पड़ी है। कहा जाता है कि उनकी संख्या बहुत थोड़ी है और वह अपने सिवा दूसरों का कुछ खयाल नहीं करते? पर वह भूलते हैं। शिक्षित भारतवासियोंकी संख्या थोड़ी नहीं दस लाखसे भी अधिक है। भीमसेनके तुल्य उनकी शक्ति है और भारतकी बड़ी जातीयताके वह सार भाग हैं जिसका अस्तित्व अङ्गरेजी राज्यकी छायामें आज नहीं, कल नहीं तो अर्द्ध शताब्दीके बाद जरूर होगा। शिक्षित भारतवासी अङ्गरेजी राज्यका ताना बाना हैं। मेरी समझसे अङ्गरेजी राज्यकी स्थिरता उन्हीं पर निर्भर है। अतएव उनके साथ कृपा, न्याय तथा उदारता का

व्यवहार होना चाहिये। डालके टूटे अङ्गरेज मजिष्ट्रेटोंकी बहालोसे चाहे सरकारी कामका वलिदान हो चाहे प्रजाकी स्वतन्त्रता नष्ट हो परन्तु अकसर नये नातजर्बेकार अङ्गरेजोंको नौकरियां मिलती हैं और अच्छे अच्छे होशियार तजर्बेकार भारतवासी बैठे रह जाते हैं। केवल युरोपनिवासी होनेके कारण अनुपयुक्त लोग अकसर काम पाजाते हैं। देशियोंको यह बात बुरी लगती है और वह उदास रहते हैं। सरकारके लिये यह अच्छी बात नहीं है।

यहां सब लोगोंके चित्तमें यही विश्वास जम गया है कि लार्ड कर्जनने एक गुप्त सरकूलर निकाला है कि २००) से ज्यादेकी नौकरियां देशियोंको न मिला करें। इससे देशी लोगोंमें बड़ी चिन्ता तथा असन्तोष फैल गया है। यह काम अन्याय, अनुदारता तथा अङ्गरेजोंके अयोग्य होनेके अतिरिक्त राजनीतिके विरुद्ध तथा नासमझीका हुआ है। मुझे आशा है कि लार्ड मिण्टो इस आज्ञापत्रको उठाकर सबका भ्रम दूर कर देंगे।

---

(६)

भारतवासियोंकी राजनीतिक उच्चाभिलाषाओंकी उपेक्षा।

छठा कारण शिक्षित भारतवासियोंकी अपने देशके शासनकार्यमें शरीक होनेकी उच्च अभिलाषाओंकी उपेक्षा करना है। लार्ड क्रोमर, मैं समझता हूं, एक बड़े राजनीतिज्ञ हैं। बीस वर्ष पहले उन्होंने कहाथा—"भारतवर्षमें समयके परिवर्तनको तरफ जो साधारण तौरसे देखता है वह इस बातमें कभी सन्देह नहीं कर सकता है कि हम अब दूसरे जमानेमें पहुंचे हैं। शिक्षाका प्रचार, स्वाधीन समाचारपत्रोंका बढ़ताहुआ प्रभाव, स्वतन्त्र

शासन प्रणालीके बदले कानूनी शासनकी प्रथा, रेल और तारका विस्तार, युरोपके साथ सीधा लगाव तथा युरोपके भाव यहाँवालों पर अपना पूरा प्रभाव डाल रहे हैं। नये नये भाव उत्पन्न होते जाते हैं। नई नई उच्चाभिलाषाएं बढ़ती जाती हैं। सर्व्वसाधारणकी रायकी शक्ति नित्य बढ़ती जाती है। ऐसी अवस्थामें शासनका विशेषकर बेकानूनी शासनका काम बड़ा मुशकिल है। बहुत तेजीसे आगे बढ़ना बुरा है। लेकिन पीछे रह जाना और भी बुरा है। अब प्रश्न यह है कि उन्नति के इस नये उत्साहको जो अभी कई तरहसे कच्चा और दिखाऊ है ठीक राह पर चलानेके लिये और बढ़ जाने पर इसके द्वारा देशको पूरा फायदा पहुंचानेके लिये किस तरहका बर्ताव करना चाहिये जिसमें अन्धाधुन्ध बेपरवाई तथा बेहूदा रोक टोक से यह घोर राजनीतिक अनिष्टका कारण न हो जावे।" बीस वर्ष पहले यह बचन इतने सत्य और विचारयुक्त नहीं मालूम पड़ते थे जितने इस समय मालूम पड़ते हैं। कुछ लोग ख्याल करते हैं कि भारतवासी अभी नन्हें से बच्चे हैं बिना सहारे चल नहीं सकते लेकिन उन्हें मालूम हो जाना चाहिये कि भारतवासी अब बालिग हो चुके हैं। उनका लड़कपन बीते बहुत दिन हो गया है। अब उनका अपने देशके शासनमें हाथ डालनेकी उच्चाभिलाषा करना स्वाभाविक है। ऐसा न करना ही मनुष्यके स्वभावके प्रतिकूल आचरण करना है। अङ्गरेजोंको देशियोंकी राजनीतिक अभिलाषाएं घटानेके बदले बढ़ाना चाहिये और उन्हें हिन्दुस्थानके शासनमें साझी बनाना चाहिये। सर विलियम हण्टरने लिखा है—"जो संसार भर की आबादीका छठा भाग हैं और जिनकी अभिलाषाएं अङ्गरेजी स्वाधीनताके आधारसे बढ़ी हैं वह अपने देशके शासनमें सदाके लिये मुंह बन्द कर बैठ सकते हैं यह मैं

विश्वास नहीं कर सकता। जिन जातियोंके दिलोंमें हमने यह बात जमादी है कि बिना प्रजाकी मंजूरीके कर लगाया नहीं जा सकता वह सदाके लिये अपने देशोंको अर्थनीतिके प्रबन्धसे बञ्चित रैखी जा सकती है यह भी मुझे विश्वास नहीं होता।" तब हमारे शासकगण असम्भव कार्य्य क्यों करते हैं? भारतवासी अलग नहीं हो सकते हैं। इसलिये जब वह प्रेम और कृतज्ञतासे मिलनेको तैयार हैं तो उनसे अभी मिलना अच्छा है। प्रजाकी भयङ्कर चिल्लाहटसे हार मानकर कोई काम करनेकी अपेक्षा खूबसूरती तथा दयासहित करना अच्छा है और यही राजनीतिज्ञोंकी चतुराई है। मैं यह नहीं कहता कि भारतवासी जो कुछ मांगते हैं सरकार वह सब उन्हें दे दे पर यह भी कोई इनकार नहीं कर सकता कि चन्द बातें जो वह मांगतेहैं वाजिब और मामूली हैं— जैसे बड़े लाटकी व्यवस्थापक सभामें चुनावके द्वारा मेम्बरकी संख्या बढ़ाने तथा भारतसचिवकी कौन्सिलमें कुछ भारतवासियोंके मेम्बर होनेकी प्रार्थना। भारतसचिव यद्यपि राजनीतिमें प्रायः बड़े बहुदर्शी और चतुर होते हैं तथापि भारतके विषयमें वह कोरेही रहते हैं। इसलिये उन्हे अपनी कौंसिलके भरोसेही चलना पड़ता है जिसमें भारतको अफसरोंका काम किये हुए ऐङ्गलोइण्डियन ही मेम्बर होते हैं। इसवास्ते भारत सचिवकी कौनसिलमें भारतको बात बतानेके लिये कुछ भारतीय मेम्बरोंका भी होना बहुत जरूरी है। माननीय गोखले महोदयने (३१ अक्तूबर सन् १९०५ को) "केम्ब्रिजयूनियन सोसायटी"में इस विषय पर व्याख्यान देतेहुए कहा था—"ब्रिटिश पार्लीमेण्टमें भारतकी तरफसे आधे दरजन मेम्बर चुने जाने चाहिये।" राज्यसम्बन्धी यह एक बड़ा प्रश्न है। मुझे विश्वास नहीं कि अङ्गरेज लोग यह नई बात पसन्द करेंगे। खैर जो हो, भारतवासियोंका

यह मतलब नहीं कि भारतके प्रतिनिधि अपने देशसे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंके सिवा और किसी बात पर अपनी राय देवें। ऐसा होने से वह इङ्गलैण्डकी दो बड़ी बड़ी राजनीतिक धड़ाबन्दियोंमें फंसकर उनके लिहाज और तरफदारीहीमें उलझ जायंगी।

भारतको बृटिश शासनके अधीन हुए सौ सालसे अधिक होगये परन्तु अमेरिकावालोंने फिलिपाइन द्वीपवालोंको जितना स्वत्व और अधिकार दिया है उसकी चौथाई भी भारतवासियोंको नहीं मिली है। अमेरिका युनाइटेड स्टेट्सके प्रेसीडेण्ट मैकिनिलेने एक बार कहा था—"फिलिपाइनवालों पर हमारा राज्य कुछ वीरता दिखानेको नहीं वरञ्च उनको आत्मशासनकी शिक्षादीक्षा देने और सभ्य तथा उन्नत बनानेके लिये है। यही हमारा कर्त्तव्य है। इसका पालन हमें अवश्य करना चाहिये नहीं तो इस बड़ी थातीके साथ जो हमें सौंपी गई है विश्वासघात होगा।" उन्होंने उक्त बचन सभ्य जगतको झूठी खातिरसे सिर्फ कागज पर लिखे रहने के लिये मुंहसे नहीं निकाले थे वरञ्च काममें लानेके लिये। फिलिपाइनवालोंको बहुत कुछ मिल चुका है आगे और भी मिलेगा। भारतवासी यह शिकायत अच्छी तरह कर सकते हैं कि स्वर्गीया महारानीके सन् १८५८ के घोषणपत्रकी प्रतिज्ञाएं जो भारतके—"मेगना चार्टा" के नामसे मशहूर है अब तक पूरी नहीं हुई।

—०—

(७)

शिक्षासे विराग।

सातवां कारण शिक्षा विशेषकर उच्चशिक्षाकी तरफ गवर्नमेंटका घृणा नहीं तो विराग प्रकाश करना है। मौंट स्टुअर्ट

एलफिन्सटन साहब शासकसे बढ़कर राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने अपनी मार्च सन् १८२४ ई० की प्रसिद्ध शिक्षासम्बन्धी रिपोर्टमें कहा है—"जिस बड़े कामको हमारे कर्तव्य हमारे लाभ और हमारे मानसे बहुत घना सम्बन्ध है उसका खयाल करना मुश्किल है अब सब कोई यह अच्छी तरह समझ गये हैं कि सब देशोंमें दरिद्रोंका सुख अधिकांश उनकी शिक्षा पर निर्भर है। केवल शिक्षाके द्वारा वह विज्ञता और आत्मगौरव लाभ कर सकते हैं जिनसे और अच्छे अच्छे गुण आजाते हैं। अगर कभी कोई ऐसा देश था जहां यह सब बातें दरकार थीं तो वह यही है।

देशियोंका धर्म्म नाज़ुक है और गवर्नमेंटकी नीव अस्थिर है। इससे हमको बड़ी बड़ी विपत्तियां झेलनी पड़ती हैं। इसका कारण राजाप्रजाका पूर्ण भेद है। इस भेदके मिटाने का कुछ उपाय होना चाहिये। उपाय केवल एक ही है। वह है प्रजाका कुसंस्कार दूर करके शिक्षाके द्वारा अपने भाव और राजनीति उनको सिखलाना।

भारत गवर्नमेंटके विरुद्ध यह कहा जाता है कि हमलोगों (अङ्गरेजों)ने पूर्व देशका राजपाट उलट पलट कर डाला है और जिन सोतोंसे देशकी श्रीवृद्धि होती थी उन्हें बन्द कर दिया है। और हमलोगों (अङ्गरेजों) ने हितकारी या भड़कीला एक काम भी नहीं किया है। यह कहना बहुत न्याययुक्त है कि हम लोगोंने देशी लोगोंकी लियाकतका झरना सुखा दिया है। जिस ढङ्गसे हमारी विजय हुई उससे विद्योन्नतिको सहायता से केवल हाथही नहीं खेंचा गया है बल्कि जातीयताकी सैंची शिक्षाके नष्ट होजाने और आगेके प्रतिभासम्पन्न महात्मागण जो कुछ करगये हैं उसके भूल जानेकी भी सम्भावना है। इस शिकायतके दूर करनेके लिये कुछ अवश्य करना चाहिये।

धीरे धीरे यह जरूरत मालूम पड़ती है कि भारतवासी ऊंचे दरजे और ऊंची तलबके ओहदों पर नियत किये जायं और पीछे अधिक दायित्वका काम उन्हें सौंपा जाय। बोर्डका मेम्बर देशी हो तो कोई हर्ज मैं नहीं देखता मैं यह भी देखना चाहता हूं कि एक जिला परीक्षाके लिये देशी जजको सौंपा जाय और एक जिला देशी कलक्टरको।"

एलफिन्सटन साहबकी यह रिपोर्ट बहुत बड़ी है जो कोई उसे पढ़ेगा वह इन बड़े राजनीतिविशारदके उच्च विचार और भविष्यवाणी पर मुग्ध हो जायगा। अभाग्यसे देशके वर्त्तमान शासकोंने इसपर कुछ अमल नहीं किया। हमारी सरकार करीब ८६ करोड़ रुपयेकी वार्षिक आयमेंसे सेनामें तो करीब २८ करोड़ खर्च करती है और शिक्षामें कुल सवा दो करोड़ जो ब्रुटिश राज्यको भारतमें दृढ़ करने के लिये मेकासिम तोप या उसी तरहके भयङ्कर जङ्गली हथियारोंसे कहीं बढ़के है। यह कोई नहीं चाहता है कि फौजका जोर कम होजाय। लेकिन फौजीखर्च बेतहाशा बढ़कर असह्य होगया है। चाहे जो हो लेकिन शिक्षाको भूलकर छोड़ना नहीं चाहिये। प्रायः सबही सभ्य देशोंमें शिक्षाके लिये राज्यसे बहुत कुछ खर्च किया जाता है। और कहीं कहीं तो प्रजाको दबाकर शिक्षा दीजाती है। हिन्दुस्थान बड़ा दरिद्र देश है। यहां शिक्षाकी बहुत जरूरत है। पर दुःख है गवर्नमेंट इससे गाफिल है। यह खयाल रोज रोज बढ़ता जाता है कि अधिकांश ऐंग्लो-इण्डियन शिक्षाके प्रचारको राज्यके लिये बुरा समझते हैं इससे उसे दबाना चाहते हैं। अफसोस यहां ऐसे भी अदूरदर्शी लोग विद्यमान हैं! शिक्षासे ब्रुटिश राज्यका कभी अनिष्ट नहीं होसकता। बल्कि शिक्षासे राज्य स्थिर और स्थायी होता है।

यह सम्भव है कि ज्यों ज्यों शिक्षाका प्रचार बढ़ेगा त्यों त्यों प्रजा अपने स्वत्व और अधिकारोंके लिये शोर मचावेगी, युरोपियन लोगोंके साथ बराबरीका दावा करेगी और हाकिमोंके अधिकारों पर हमला करेगी। लेकिन ऐसा होना अङ्गरेजोंका इस देशमें जो बड़ा उद्देश्य है उसका पूरा होना है और इससे अङ्गरेजोंका मान तथा महत्व सदाकेलिये बढ़ जायगा। सिवा इसके हिन्दुस्थानमें शिक्षा बन्द करनेका खयाल करना लड़कपन है। कोई गवर्नमेण्ट शिक्षाको बन्द करनेमें कृतकार्य्य नहीं होगी चाहे कोई चेष्टा करके देख ले। भारतका स्वामी इङ्गलैण्ड है कुछ रूस नहीं। जहां जहां अङ्गरेज गये हैं तहां तहां उन्होंने स्वतन्त्रता स्वाधीनता तथा विद्याका झण्डा उडाया है। वह ऐसी राक्षसी नीति कभी नहीं चलावेंगे। इसके अलावे भारतवासियोंको विद्याके लिये बहुत बड़ा प्रेम होगया है। इस समय उनको विद्यावञ्चित करना जरा टेढ़ी खीर है। पूर्व्वसमयके ऐंग्लोइण्डियन राजनीतिज्ञों ने भारतवासियोंकी भलाई तथा सुख बढ़ानेके लिये शिक्षाके झरनेका मुंह खोल दिया था। वह झरना इस समय बड़ी नदी बनकर बराबर चौड़ा और गहरा होता दूरतक अपनी शाखाएं फैलाता वेगसे आगे बहता जाता है। इसके वेगको रोकनेके लिये युनिवर्सिटी ऐक्टकी तरह कानूनका बांध बन सकता है लेकिन इससे होगा क्या? जल थोड़ी देर केवल चक्कर खाकर ऐसे ऐसे बांधोंको तोड़ फोड़कर गड़गड़ाहट के साथ आगे निकल जायगा।

युनिवर्सिटी ऐक्टके कारण बहुत असन्तोष फैल गया है। कोई इसके विषयमें कड़े शब्द निकालना पसन्द नहीं करता है पर है यह पीछे ढकेलनेवाला उपाय जिसने विश्वविद्यालयोंको राज्यका एक विभाग बना दिया है और सिनेटकी स्वाधीनता छीन ली है। देशी समाचारपत्रोंने मिलकर इसका विरोध किया, प्रजाने इसके

विरुद्ध सभाएं कीं, और तीनों पुराने विश्वविद्यालयोंमें बहुत कुछ रोकटोक की। मतलब यह कि सब लोगोंने इसे नापसन्द किया। क्यों एसा हुआ ? क्या भारतवासी ऐसे पागल होगये हैं कि उन्हें भले बुरेकी समझ नहीं रही ? यह हो नहीं सकता। वह घबरा गये थे क्योंकि उन्होंने समझ लिया कि हमारे बालकोंकी शिक्षा पर आफत आगई है।

माननीय रैले साहबने युनिवर्सिटी बिल पेश करनेके समय कहा था—"माइ लार्ड, कभी कभी यह प्रश्न उठता है कि अङ्गरेजी शिक्षासे भारतका लाभ हुआ है या हानि। असलमें दोनों बातें हुई हैं पर मेरी समझसे हानिकी अपेक्षा लाभ बहुत अधिक है। नई शिक्षाके अस्थिर प्रभावको हम रोज देखते हैं। यह ऐसे लोगोंके गले मढ़ी जाती है जो इससे दूर भागते हैं। पर तो भी यह बड़ी बात हुई है कि पाश्चात्य विज्ञानके आविष्कारों और अङ्गरेजी कानूनके तत्वकी ओर पूर्ववालोंका मन आकृष्ट होगया है। यह हम स्वीकार करते हैं कि हमारे अधीन जो स्कूल और कालिज हैं उनसे हमें कुछ अच्छे सहयोगी योग्य जज कामके हाकिम और शिक्षक मिले हैं जो अपनी सीखी हुई बातोंसे दूसरों का उपकार करते हैं। स्कूल और कालिजोंसे हमें असन्तुष्ट बी० ए० भी मिले हैं जो कालिजोंसे विद्या तो बहुत थोड़ी लेकर निकले हैं लेकिन अपनी योग्यता बहुत कुछ समझते हैं। फेल हुए विद्यार्थियोंके दलने तो छोटी छोटी नौकरियोंका रास्ता घेर रखा है। क्या हमलोग लाभ बढ़ाने और बाधा हटानेके-लिये कुछ कर सकते हैं ? क्या हमलोग पढ़ाने और परीक्षा लेनकी रीतिको उन्नत कर सकते हैं जो यह खिचड़ी फल पैदा करती है ?" विनयपूर्वक रैले साहबसे मैं अवश्य कहूंगा कि शिक्षासे विशुद्ध फल मिला है। असन्तुष्ट बी० ए० के होनेसे

शिचा दूषित नहीं होती है। रोगका कारण अच्छी तरह निर्णय नहीं किया गया है। नये कानूनसे असन्तुष्ट बी० ए० लोगोंका निर्मूल होना तो दूर रहा उनकी संख्या भी कम होना असम्भव है। खैर जो हो, हम आशा करते हैं कि गवर्नमेण्ट सिनेटके कामोंमें बहुत कम दखल देगी और देशके लाभार्थ कार्य्य निर्विघ्न होता रहेगा।

अब दो चार बातें शिल्पशिचाके विषयमें कही जाती हैं। अफसोस है भारतवासी विद्वानोंके लिये जो मार्ग खोले गये हैं वह परिमित हैं। इन्हें दूसरे विभागोंमें भी जाने देना चाहिये। देशी कारीगारी नष्ट होगई या होने पर है। हड्डी और मांसके हाथ लोहे और स्टीमके हाथोंसे नहीं लड़ सकते हैं। हमारे देशमें शिल्पका एक बड़ा शिचालय होना चाहिये। यह सुन्दर जरूरी काम हाथमें कौन ले सकता है? बस गवर्नमेण्टके सिवा और कोई नहीं। प्रजासे यह होना असम्भव है। भारतवासी बड़े दरिद्र हैं। वह सहायताकेलिये अवश्य सरकारके मुंहकी तरफ देखेंगे। इस काममें जो रुपये खर्च होंगे वह सौगुना फल देंगे और प्रजाका सन्तोष तथा आनन्द गवर्नमेण्टकेलिये बड़ी भारी फसल होगी।

(८)

किसानोंकी दरिद्रता।

आठवां कारण भारतके किसानोंकी नितान्त दरिद्रता है। भारतकी जनसंख्या तीस करोड़ है जिसमेंसे बीस करोड़ मनुष्य खेतीसे गुजारा करते हैं। भारत बड़ा दरिद्र देश है। इसके कल्पित धनकी बात पुरानी कहानी है। यहांवालोंकी

औसत सालाना आमदनी तीस रुपये हैं और इंग्लैण्डवालोंकी पौने सात सौ। भारतके कृषक बड़ी शोचनीय दशामें है। वह भूखों मरते हैं, उन्हें दिनमें एक बार भी भरपेट अन्न नहीं मिलता है। अकाल के समय वह मक्खियों की तरह मरते हैं। लोग कहते हैं कि गत दस वर्षों में लगभग दो करोड़ मनुष्य अन्न बिना मर गये। यह संख्या इंग्लैण्ड स्काटलेण्ड और आयरलेण्डकी जनसंख्याकी आधीसे कुछ कम है। ऐसा कौन अंगरेज है जिसका कलेजा अपने देशके लगभग आधे मनुष्योंके वियोगका खाली खयाल करके कांप न उठे? तथापि भारतकी करोड़ों सन्तान नष्ट होगई हैं। भारत बेचारा सीधा सादा और सहिष्णु है। पर उसके दिलसे खून और आंखोंसे गर्म्म गर्म्म आंसुओंकी धारा चुपके चुपके बह रही है। कहा जाता है कि भारतके किसान विचारशून्य और अदूरदर्शी हैं। अपनी विपत्तिके कारण वह आप ही हैं। यह बेजड़ दोष अनुदार लोग हो उनपर लगाते हैं। जो यह दोष लगाते हैं भला वही, हम देखें, तीन आने रोज की आमदनी पर चैनचान और फजूल खर्च कर तो लें। भारत के घरके मालिक किसानोंकी औसत आमदनी तीन आने रोज है। इस थोड़ी सी आमदनीमेंसे जो रोजके खर्चकेलिये भी काफी नहीं है कुछ जमा करना भला कब सम्भव है? मिस्टर डोनल्ड स्मीटन सी० एस० आई० पहले बड़े लाटकी कौन्सिलके मेम्बर थे। गत वर्ष स्काटलेण्डमें लेकचर देते समय उन्होंने कहा था—"भारतमें सचमुच अन्नका अकाल नहीं पड़ता है। यहां अकाल पड़ता है रुपयोंका। भारतशासनका सबसे बड़ा रोग अथवा पाप यही अकाल है जिसका सामना हमलोगोंको सदा करना पड़ता है। भारतका दुर्भिक्ष वास्तवमें दुर्भिक्ष नहीं है क्योंकि यहां जितने अन्न की जरूरत होती है उसका

अभाव कभी नहीं होता है। वहां अन्नका टोटा कभी नहीं होता। टोटा होता है रुपयेका जिससे अन्न खरीदा जाता है। क्या यह आश्चर्य्यकी बात नहीं है? इसका कारण टैक्स है जो आदमी पीछे तीन रुपये और घर पीछे साढ़े तेरह रुपयेसे ज्यादे पड़ता है। अब जरा इसपर ख्याल करो। बीस करोड़ आदमियों-की औसत सालाना आमदनी सरकारकी तरफसे आदमी पीछे सवा सतरह रुपये (एक पौंड तीन शिलिङ्ग) कूती गई है। बस इस हिसाबसे चार करोड़ घरोंका गुजारा ८२ शिलिङ्ग साल यानी तीन पेंस (तीन आने) रोजमें होता है तीन ही आने रोजमें खाने पीने और पहननेका खर्च चलता है। क्या गृहस्थीका मालिक तीन आने रोजकी आमदनीमेंसे भी कुछ बचा सकता है? कभी नहीं, यह सोचना ही वृथा है। सच पूछो तो जब नाजकी दर बेतरह महंगी नहीं होती है उस अच्छे से अच्छे समयमें भी उन्हें खाली खुराकके खर्चसे भी कमती मिलता है। उनकी औसत आय कोई तीस सालसे बराबर घटती चली आती है। और उधर नाज तथा और और जरूरी चीजोंका दाम लगभग दूना होगया है। हर साल खाने पीनेकी चीजोंका मूल्य चढ़ता जाता है। टैक्स बढ़ता जाता है पर टैक्ससे दबेहुए इन बीस करोड़ आदमियोंकी आय ज्योंकी त्यों बनी हुई है। ऊंचे दर्जे के अफसरने कहा है—"भारतमें करोड़ों आदमी आठ महीने ही किसी तरह पेट भरते हैं। बाकी चार महीने मांगकर कर्ज लेकर यर चोरी करके काटने पड़ते हैं। इसमें कुछ आश्चर्य न करना चाहिये। १८८० ईस्वीमें यहांकी मृत्युसंख्या २१ प्रति हजार हुई। और पिछले दस वर्षों में बढ़कर १९०० ईस्वीमें ४० तक पहुंच गई। बीस सालमें प्रायः दूने आदमी मरने लगे। स्कोटन साहबने भारतके कृषकोंकी अवस्थाका यथार्थ वर्णन किया है।

जे० ई० कोनर साहब भारतमें एक समय 'स्टटिस्टिक्स" (देशदशा विवरण) के डाइरेक्टर जनरल थे। अफसरोंका काम कर चुकनेके कारण अफसरों का पक्ष करना उनके लिये स्वाभाविक था तोभी गत वर्ष मईमें "शिल्पसमिति" के भारतीय विभागमें एक लेख पढ़ते समय उन्हें लाचार होकर भारतके किसानोंको घोर दरिद्रता स्वीकार करना पड़ी थी। उन्होंने कहा "युरोपके किसी देशकी तुलनामें भारत अत्यन्त दरिद्र देश है। वहां ऐसा कम खर्चवाला शासन दरकार है जो सावधानीके साथ उस देशके धनका उचित व्यवहार करे। राज करके अध्यक्षों- की असावधानी और अदूरदर्शितासे हिन्दुस्थानमें जितनी जल्दी खराबी हो जाती है उतनी और कहीं नहीं होती और खराबी भी कैसी कि जिसका कुछ उपाय नहीं।" गवर्नमेण्टकी वर्त्तमान भूमिसम्बन्धी नीतिके विषयमें उन्होंने कहा है—"ऋणदाताओंके चंगुलसे किसानोंको बचानेकेलिये चेष्टाएं होरही हैं उनसे कुछ ज्यादे फायदा होगा इसमें सन्देह है। अगर पूरा फायदा हो भी तो जबतक जमीनकी पैदावारका ज्यादे हिस्सा किसानोंके हाथमें न छोड़ दिया जायगा और सरकारके बढ़तेहुए लगानसे तथा जमींदारोंको बढ़ती हुई मालगुजारीसे वह न बचाये जायंगे तबतक उनकी सच्ची उन्नति नहीं होगी।" नहरोंके अधिक बनने तथा नये नये पौधों और खेतीके औजारोंके चलानेसे यहां भलाई होसकती है यह जानतेहुए मिष्टर जी० कोनर साहबने यह राय जाहिर की थी कि किसानोंकी दुरवस्था सुधारनेकेलिये जमीनकी मालगुजारी २५।३० सैकड़ा घटाना दरकार है। मैं समझता हूं उन्होंने बहुत ठीक बात कही है। ऐब ढांकने, मरम्मत करने या बेदिलीसे काम नहीं चलेगा। हिन्दुस्थानमें जमीनकी जमाबन्दी तबाहीका घर है। पूरी पैदा-

बारमेंसे १५।२० सैकड़ा मालगुजारी देनी पड़ती है। ऐसी मालगुजारी किसी सभ्य देशमें कभी नहीं सुनी गई है।

विलायत जाते समय लार्ड कर्जन की दावत बम्बईके बायकल्ला क्लबमें हुई थी। भोजनके बाद आपने अपनी स्पीचमें फरमाया था—"मैं भारतके उन करोड़ों दरिद्र किसानोंकी बाबत कहता हूं जो सीधे शान्त तथा सन्तोषी हैं और जिनकी संख्या सौ पीछे अस्सी है। उनकी जीविका खेती है। वह कूटनीति (पालिसी) नहीं जानते पर उसके बुरे भले फलको भोगते हैं। उन्हें और लोग क्या उनके देशवासी भी बराबर भूल जाते हैं। हरेक पालिसीका उत्तर दाता मैं हूं और हरेक बचतके जिसको खर्च करनेका बन्दोबस्त मैंने किया है वह पीछे रहे हैं। हम उन्हें न धनी देखते न शानदार और न उन्हें हम बड़े बड़े शहरोंकी गन्दगीमें देखते हैं। वह कभी समाचारपत्र नहीं पढ़ते—वह कुछ पढ़ ही नहीं सकते हैं। वह राजनीति जानते ही नहीं। लेकिन देशकी हड्डियां और नसें वही हैं। सिरसे पसीना टपकाकर वह जमीन जोतते हैं। भारतकी आयकी चौथाई उन्हींके श्रमसे मिलती है। हरेक बड़े लाटके प्रधान लक्ष्य वही होने चाहिये।" यह बातें तो अच्छी हैं लेकिन यह कहना झूठ है कि भारतवासी अपने दिलोंमें उन्हें जगह नहीं देते हैं। यहांके सब राजनीतिज्ञोंने किसानोंकी दीनहीन अवस्थाका वर्णन अनेक बार किया है और सरकारकी भूमिसम्बन्धी नीतिकी बहुत बार निन्दा करके बताया है कि वह देशका नाश कर रही है। मालगुजारी कम होनेहीसे किसानोंकी जान बच सकती है और यह कृपा केवल सरकार ही कर सकती है। अस्तु हमें आशा है कि आगे "हरे बड़े लाटके प्रधान लक्ष्य" किसान ही होंगे। अबतक टैक्स वसूल करनेवालोंने तो बड़ी बेरहमी से बेतरह उन्हें नश्तर मारा

है। लार्ड कर्जनने यह कहकर अपने दिलपर मरहम लगाया है कि "खासकर किसानों ही के वास्ते हमने दो बार नमकका महसूल घटाया। उन्हींके वास्ते दो वर्षोंमें लगभग ढाई करोड़ मालगुजारी माफ कर दी। उन्हींके वास्ते जमीनकी जमाबन्दी बहुत थोड़ी थोड़ी बढ़ाई गई और तहसील भी ढिलाईसे होती है उन्हींकी साख बढ़ानेके लिये 'कोअपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी' खड़ी की गई जिसमें तकावी कम व्याज पर उन्हें मिला करे और साहूकारोंके अनुचित व्याजसे उनके प्राण बचें। यह वही लोग हैं जिन्हें हम संसारमें ऊंचा किया चाहते हैं, जिनके बालकोंको हम शिक्षा देना चाहते हैं, जुल्म जबरदस्तीसे जिन्हें बचानेके लिये भारतीय पुलिसका सुधार हमने किया है और जिनके घरोंसे हम अकाल और दरिद्रता दूर किया चाहते हैं।" लार्ड कर्जनने कृषकोंकी अवस्थाका चित्र खेंचा है लेकिन बहुत रञ्जित करके। जो हो, हमलोग नमकका महसूल घटाने, मालगुजारी मुआफ करने और कृषिबंक स्थापित करनेके लिये कृतज्ञ हैं। लेकिन यह सब काम केवल ऐब ढांकनेवाले है। यह प्याससे मरनेवाले गलेमें एक बुन्द जल छोड़नेके समान है। बजट में लबालब रुपये थे, लगातार कई सालसे बचत होती चली आती थी और इधर कृषक लोग प्लेग और दुर्भिक्षसे ऐसे दुःखी हुए कि सरकारको लाचार होकर यह सब काम करने पड़े थे। यह मत समझिये कि मैं दोष दिखला रहा हूं। गत अकालोंमें सरकारने अपने कर्मचारियोंके द्वारा बड़ी जवांमर्दीका काम किया है। यह सत्य है कि लाखों आदमी अन्नबिना मर गये। यदि गवर्नमेण्ट मौके पर जल्द उदारतासे मुट्ठी ढीली कर परिश्रम न करती तो अगणित मनुष्योंका स्वाहा हो जाता। इतनेपर भी यह कोई नहीं कह सकता है कि सरकारने सीधे गरीब और दुःखित

कृषकोंके साथ अपना पूर्ण कर्त्तव्य पालन किया है। जमीन कमजोर होगई है लेकिन किसानोंके पास खाद डालनेके लिये कौड़ियां नहीं हैं। सारा वर्ष बीत जाता है पर उनका चित्त प्रसन्न करने को आशाकी एक किरण या बरकत की एक झलक भी दिखाई नहीं पड़ती है। वह मैले कुचैले अन्धेरे झोपड़ोंमें रहते हैं जिनके छप्पर फूसके और दीवार टट्टियोंको गोबर मिट्टीसे लिपी हुई होती हैं और जिनसे घोर दरिद्रताकी बुरी बास आती है। जमीन जहांकी सदा सर्द रहती है बरसातमें सदा ज्वरका घर बन जाती है। उनके पास न कुछ असबाब है और न बरतन बासन। हैं केवल मिट्टीके कुछ बरतन, पीतलकी दो थालियां, दो कटोरे और एक चक्की जिससे बड़े तड़के उनकी स्त्रियां दुःखभरी आवाजसे मानो चक्कीकी गड़गड़ाहटसे सुर मिलाकर पुराने समयके सीधे सादे गीत गाती हुई आटा पीसती हैं। बिछानेके लिये उनके पास चटाई भी नहीं है। बेचारे थकेमांदे योंही भूमि पर लेट जाते हैं और एक चादर या कम्मल ओढ़ लेते हैं। उनकी पोशाक सादी है। एक जोड़ा धोती, एक या दो मिरजई और एक पगड़ीसे बस उनका काम चलता है। खाने पीनेकी चीजें रखनेके लिये उन्हें अलमारियोंकी जरूरत नहीं है। अलमारीका काम वह छीकोंसे लेते हैं। वह धोती बांधकर बाहर निकलते हैं। कभी मिरजई पहनते हैं कभी नहीं। औरतोंके पास दो साड़ियां और दो चोलियांही पूंजी है जिन्हें वह गांवके कूए पर नहाकर रोज बदल लेती हैं। जाड़ेमें मोटे वर्षोंके घिसे कम्मलोंसे शीत निवारण करती हैं। उनके लड़के सदा दिगम्बर रहते हैं। उनका खाना पीना भी निहायत मोटा है। रोटी दाल भात दही चटनी और जायका बदलनेके लिये कोई साग उनका प्रधान भोजन है। बेचारे यह भी भर पेट नहीं पाते हैं। उनके

शौककी चीज तम्बाकू या बीड़ी पीना ही है। उनकी तकदीर खोटी है। उनके दुःख बड़े हैं। वह सन्तोषके साथ उन्हें सहन करते हैं क्योंकि परमात्मा पर उनका पूरा विश्वास है।

मालगुजारी थोड़ी बहुत कम कर देने से किसानोंकी दशा नहीं सुधरेगी। मालगुजारी सैकड़ा पीछे चालीस कम होना चाहिये। जमीनकी पैमाइश आजकलकी अपेक्षा देरसे होना चाहिये और सरवेके अफसर अकेलेही एक जिलेकी पैमायश न करें। बल्कि उस जिलेके १०।१२ अच्छे अच्छे चुने हुए नामी ग्रामी मनुष्योंको सहायतासे करें। इससे नई जमाबंदी बहुत ठीक होगी और सरवेके अफसरोंके बारेमें जो कुछ भला बुरा सुननेमें आता है वह सुनाई नहीं पड़ेगा। सिवा इसके सरवेअफसरों और पञ्चोंमें मतभेद हो जाय तो गवर्नमेण्टके आगे बहुतसे मसाले तैयार रहेंगे जिनसे वह उसका फैसला कर देगी। जो राजनीतिज्ञ यह काम पूरा कर किसानोंके घरमें सुखचैन ला देगा वह भारतके करोड़ों मनुष्योंके आशीर्वादका भाजन होगा। अङ्गरेजी राज्य में बड़े बड़े शहर और कसबोंमें तो खूब आबादी और चहलपहल हुई पर देहात तबाह और उजाड़ होगये हैं।

---

(८)

पार्लीमेण्टकी बेपरवाई।

नवां कारण ब्रिटिश पार्लीमेण्टके नामसे अथवा उसकी सीधी या फेरफार की मंजूरीसे राजमन्त्रियोंका भारतपर प्रायः अन्याय करना है। लोग कहते हैं कि पार्लीमेण्टका जोर घट रहा है। अब पिट, फाक्स तथा बर्क; पील और पामरटन, कौबडन और ब्राइट; डिसरैली और ग्लैडस्टोन जैसे राजनीतिविशारद नहीं

रहे जो राजनीतिके गूढ़ तत्वोंको पूरी छानबीन कर तथा अपने ऊंचे आदर्श, भारी उद्देश्य, बड़ी बुद्धिमानी और दूरन्देशीसे सभ्य संसार की प्रशंसा लाभ कर सच्ची राजनीतिके नभमण्डलमें उच्च-स्थान प्राप्त कर सकें। जिन राजनीतिज्ञोंके कारण इङ्गलैण्ड का बहुत कुछ गौरव हुआ था दुर्भाग्यसे अब वह नहीं रहे। अब तो राजसेवामें * दूसरे और तीसरे दरजेके राजनीति जाननेवाले रह गये हैं जिनके हाथमें इङ्गलैण्डकी भारी सलतनतकी बागडोर है। विरोधी दलवाले भी वैसेही कमजोर हैं। तोभी अगरेजी पार्लीमेण्ट स्वाधीनता, स्वतन्त्रता और न्यायकी प्रेरक है। दुर्भाग्यसे हमारे ब्रटिश व्यवस्थापकगण कामोंकी भीड़भाड़के कारण भारत्की बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। ऐसा नहींहोना चाहिये। भारत-वासी अपना दुःख दूर करानेके लिये स्वभावतः उनके मुंहकी तरफ देखते हैं। भारतवासियोंका विश्वास डिगने न पावे। ऐसा होना ब्रटिश राज्यके लिये भारतमें अशुभ लक्षण है।

कई वर्ष हुए भारत गवर्नमेण्टके खजानेमें रुपयोंका तोड़ा होगया था। उसने लाचार होकर बाहरसे यहां आनेवाले कपड़ों-पर फिरसे महसूल लगाया। इससे लङ्काशायरके जुलाहोंको नुकसान पहुंचा। बस इंग्लैण्डमें उन लोगोंने खूब रोला मचाया। तब राजमन्त्रियोंने उनकी खातिरसे भारत गवर्नमेण्टको हिन्दु-स्थानमें बननेवाले कपड़ों पर वैसीही ड्यूटी लगानेके लिये दबाया था। यह सरासर जबरदस्ती हुई। अपनी शक्ति खोदनेकी अपेक्षा मन्त्रियोंने लङ्काशायरके जुलाहों की चिल्लाहट से दबकर भारतके जुलाहोंको बहुत कुछ नुकसान पहुंचाना अच्छा समझा। मान लो कि ग्रेटब्रीटेनकी आय घट जावे और भारतसे विलायत

* यह बालफूर साहबके मन्त्री पदत्याग करनेके समाचार यहां पहुंचनेके एक दिन पहले लिखा गया।

जानेवाले गेहूं या और किसी चीज पर वहां महसूल लगानेकी जरूरत पड़े और भारतवासी देशी गेहूं और किसी चीज पर वैसीही ड्यूटी लगानेकी बात कहें तो क्या अङ्गरेज लोग इसे मूर्खता और अन्यायका काम नहीं कहेंगे? शाहनशाही मिजाजका बहुत गीत गाकर भी जो काम अङ्गरेज कभी नहीं करते वह बेचारे भारतवासियोंसे जबरदस्ती कराया गया।

एक हालकी घटना सुनिये। लार्ड कर्जन और लार्ड किचनर में फौजी मामलोंके कारण जो तकरार हुई थी उसमें लार्ड किचनरहीकी जीत हुई। लार्ड कर्जन वीरताके साथ लड़े पर कमजोर राजमन्त्री (सिक्रेटरी आफ ष्टेट) ने उन्हें धर पटका जो कमजोर मन्त्रीदलके बस हांमें हां मिलानेवाले थे। लार्ड किचनर अङ्गरेजोंकी नाकके बाल हैं। उनकी बात टालना बालफूर* साहबको अपनी मौत बुलानेके समान मालूम हुआ। अगर लार्ड किचनर भारतके सेनापतिका पद त्याग देते तो इंगलैण्डवालों के क्रोधका ठिकाना न रहता। उनके क्रोधका बड़ा भय मन्त्रिदलको था। बस इसीसे लार्ड कर्जनके योग्यतापूर्वक विरोध करने पर भी मन्त्रिदलने अपनी शक्ति खोदने की अपेक्षा लार्ड किचनरके आगे हाथ जोड़ना अच्छा समझा। भारतके सबसे बड़े फायदेका इस तरह बेशरमी से गला घोंटा गया और उसके कानूनी शासन पर वज्र गिराया गया। इस विषयमें "टाइम्स आफ इण्डिया" ने लिखा था—'बड़े लाट और जङ्गीलाटकी तकरार बरायनाम तो इस बातके लिये थी कि फौजी मेम्बर और फौजी महकमा तो रहें पर उनके कुछ अधिकार घटाये जायं। किन्तु असल बात यह थी कि लार्ड किचनरको फौजी इन्तजाम तथा खर्चपर पूरा अधिकार मिले और सब सभ्य देशोंमें जो नियम कानूनी शासनके प्रधान अङ्ग हैं उन्हें तोड़कर वह मनमानी करें।" लार्ड कर्जनने बड़े लाट ग

पद त्याग दिया। वह एक बड़े कानूनी मामलेके वास्ते बहादुरी के साथ लड़े थे। उनकी और भारतवासियोंकी राय पूरे तौरसे मिलती थी परन्तु भारतवासियोंने अपनी सम्मति प्रकाश करनेके लिये कोई सभा समिति नहीं की जैसी लार्ड रिपनके समय में इलबर्ट बिलके लिये की थी। भारतवासी लार्ड कर्जनके शासन को अपने बुरे भाग्यका फल समझते थे। उनके इस्तेफेकी खबर सुनकर उनकी जानमें जान आगई।

यद्यपि किचनर कर्जनकी तकरार को हिन्दुस्थानकी बहुत बड़ी भलाईसे सम्बन्ध था तथापि ब्रिटिश पार्लीमेण्टने इसपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। मानो इससे उसको कुछ मतलब ही नहीं है। यह बड़े अफसोसकी बात है। ऐसे मौके पर एक बड़ी व्यवस्थापक सभा खुर्राटे ले तो यही मानना होगा कि उसे अपने कर्तव्यका सच्चा ख्याल नहीं है। खैर आशा है कि बानरमनके नये मन्त्रिदलके समयमें पार्लीमेण्ट अपनी उदासीनता परित्याग कर इस बुरी बलासे पिण्ड छुड़ावेगी जो भारतके खजानेको चट कर जानेवाली है।

एक बड़ी आफत और है जिसकी बाबत यहां कुछ कहा जासकता है। वह है भारतके सैनिक व्ययसे इङ्गलैण्ड का दूर भागना। भारतकी सेना केवल भारतहीका काम नहीं करती है वरञ्च इङ्गलैण्डका भी। भारतकी सेनाने मालटा, चीन, इजिप्ट (मिसर) अरब और अफरीका जाकर युद्ध किया है और आगे भी जायगी। इङ्गलैण्डकी सरकार खाली हुक्म देना जानती है खर्च बर्चसे उसको कुछ वास्ता नहीं। फिर भारत इसका खर्च क्यों उठावे? क्या यह मुनासिब और इन्साफ है? विलायतमें ऐसे राजनीतिज्ञोंकी कमी नहीं है जिनके मन और मुखपर तो इम्पीरियालिज़म (शाहनशाही) है पर दिलमें नहीं। क्या

कनाडा या आष्ट्रेलियापर ऐसा अन्धेर और बेईमानी करने का साहस अङ्गरेजोंको होसकता है? कभी नहीं। पर क्या हो— भारत कमजोर है इसीसे उसका गला घोंटा जाता है। सच है दुबले मारें शाह मदार। भारत दरिद्र है। इङ्गलैण्ड धनी है। इन दोनोंकी तुलनाही नहीं हो सकती। लोग कहते हैं कि इङ्गलैण्डकी सम्पत्ति १५ अरब है और भारतकी ६० करोड़ है। फौजी खर्चके बोझसे भारतकी सांस तो पहलेहीसे फूल रही है। इसकी आमदनीकी तिहाई तो इसीमें उड़ जाती है। अतएव भारत न्यायके लिये पार्लीमेण्ट से अपील करता है। इङ्गलैण्डके संसारविस्तृत राज्यका एक अङ्ग होनेके कारण वह उदारता और सहानुभूति का अधिकारी है। और कुछ नहीं तो न्याय तो जरूर होना चाहिये।

---

(१०)

लार्ड कर्जनका शासन।

दसवां कारण लार्ड कर्जनका शासन है। यह विषय बड़ा है पर बहुत थोड़े शब्दोंमें कहाजासकता है। बायकला क्लबमें लार्ड कर्जनने अपनी बड़ी वक्तृता यह कहकर समाप्त की थी कि बस भारत मेरा न्याय करे। सो भारतने न्याय कर दिया और श्रीमान् दोषी ठहराये गये।

श्रीमान् युवराजके युवराज्ञी सहित बम्बई पधारनेके दिन वहांकी गलियों में दर्शकोंकी खचाखच भीड़ थी। खिड़कियों और छज्जों पर तिल धरने की जगह नहीं थी। सभी जात पांतके आबाल वृद्ध वनिता अपने भावी राजा रानीके स्वागतके लिये बड़े चाव से बाट जोह रहे थे। जब लार्ड कर्जन युवराजको अभ्य-

थैनाके लिये गवर्नमेण्ट हाउससे अपोलो बन्दर गये तो देशी मुहल्लों में किसीने आनन्दध्वनि नहीं की हालांकि सब जानते थे कि वह दो ही चार दिनके बस और मेहमान हैं। थोड़ीही देरके बाद जब सर फीरोजशाह मेहताकी सवारी निकली तो सबने हर्ष प्रगट किया। क्यों ऐसा हुआ? क्यों सम्राटको एक साधारण प्रजाको देखकर लोगोंने उत्साह दिखाया और सम्राटके प्रतिनिधिको देख कर उनका सब उत्साह ठण्ढा पड़ गया? कारण यह है कि लार्ड कर्जनसे सब लोग असन्तुष्ट थे। भारतके और और प्रान्तोंमें भी लोगोंने कुछ उत्साव नहीं दिखाया था। लार्ड कर्जनने भारतवासियोंके दिलोंमें घर नहीं बनाया। यह सत्य है कि 'चेम्बर आफ कामर्स' जैसी ऐङ्गलो इण्डियन एसोसियेशनने, चन्द राजा महाराजोंने तथा इनी गिनी देशी सभाओंने ही लार्ड कर्जनको अभिनन्दन पत्र दिये और उनकी तारीफ की। ऐङ्गलो इण्डियन सभाओंको मैं कुछ गिनता नहीं। इसका कारण स्पष्ट ही है। राजा महाराजोंके बारेमें कुछ न कहना ही अच्छा है। इसके सिवा भारतकी प्रजामें उनकी गिनती नहीं। कतिपय देशी सभाओंके विषयमें कहना यह है कि वह प्रभावशाली या बड़ी नहीं हैं। खैर मान भी लिया जाय कि वह प्रभावशाली और बड़ी हैं किन्तु उनकी संख्या बहुत थोड़ी है। बस इसीसे समझ लेना चाहिये कि लार्ड कर्जनसे कोई सन्तुष्ट न था। ऐङ्गलो इण्डियन भाटोंने तारीफ करके लार्ड कर्जनको सातवें आसमान पर चढ़ा दिया और भारतवासियोंने उनपर दोषारोपण किया। ऐसी विचित्र बात क्यों हुई? भारतवासी अपनी कृतज्ञताके लिये प्रसिद्ध हैं। जरासी दया उनपर दिखाइये बस वह बड़े प्रेमसे गुलाम बननेको तैयार हैं। लार्ड कर्जन असाधारण योग्यता और बुद्धि रखने पर भी अपनी बुद्धिमानी और अहंकारहीमें चूर रहे। बस इसीसे

वह खराब हुए। उन्होंने कुछ अच्छे कार्य्य देशके उपकारके लिये भी किये हैं। पर देशियोंपर सदा उनकी वक्रदृष्टि रही। वह उनपर जुल्म तथा घृणा करते थे। वह सुयोग्य शासक थे पर राजनीतिज्ञ नहीं। उन्होंने कानवोकशनके समय तथा युनिवर्सिटी बिलको दृढ़ करनेके लिये कौन्सिलमें जो अभागी स्पीचें दी थीं उनको भारतवासी जल्द नहीं भूलेंगे।

लार्ड कर्जनने नमकका महसूल घटाकर, मालगुजारी माफकर, कृषिबङ्क खोलकर, आबपाशीका काम बढ़ाकर और कालों पर अत्याचार करनेवाले गोरोंको दण्ड दिलवाकर जो उपकार किया है उसका गुण भारतवासी पूरे तौरसे गाते हैं। कई साल से बड़ी बचत होती चली आती थी, किसानकी दरिद्रता भयानक रूप धारण करती चली जाती थी और अकालके समय उनके पशु तथा बीज नष्ट होजाया करते थे। लोग कहते हैं कि बस इसीसे लार्ड कर्जनको देश कालके अनुसार यह सब काम करने पड़े थे। खैर इन कृपाओंके लिये लार्ड कर्जनको धन्यवाद न देनेसे कृतघ्नता होगी। एक पलड़े पर तो यह सब काम हैं और दूसरे पर है दिल्लीदरबारकी धूमधाम, तिब्बतकी चढ़ाई युनिवर्सिटी ऐक्ट, स्टेटसिक्रेट ऐक्ट, बङ्गविच्छेद तथा सबकी नकेल अपने हाथमें लेनेकी प्रबल इच्छा और ऊंचे ऊंचे पदोंसे देशियोंको निकालनेकी चेष्टा।

दिल्लीदरबारकी धूमधाम व्यर्थ और बेकार थी। इसमें लाखों-पर पानी फिर गया। दरबारके समय प्रति सप्ताह बीस तीस हजार मनुष्य प्लेगसे मरते थे और अकालसे लोगों का पिण्ड भी नहीं छूटा था। ऐसे बुरे समयमें दरबारकी धूमधाम कभी नहीं होनी चाहिये थी। सब लोग चौड़े मैदान कहते थे कि लार्ड कर्जन सम्राट बनने का हौसला पूरा करना चाहते हैं। मैं

समझता हूं कर्जन बहादुरकी यह इच्छा नहीं थी। वह हिन्दुस्थानमें इङ्गलेण्डकी सर्वप्रधानता तथा अपनी झूठी शेखी दिखलाया चाहते थे। इसी हेतु इतना काण्ड रचा गया था। इसका विरोध किसीने नहीं किया। जो बात सत्य है उसके विरोध करनेकी जरूरत ही भला क्या है? भारतवासी सम्राट एडवर्डका दिलसे प्यार करते हैं। उनको यह निश्चय था कि अगर भारतकी सच्ची दया सम्राटको प्रगट करदी जायगी तो वह इस धूमधामके लिये लाखोंपर पानी नहीं फिरने देंगे।

लार्ड कर्जनके खुशामदियोंने युनिवर्सिटी ऐक्ट, सिक्रेट ऐक्ट तथा बङ्गविच्छेदमें कुछ ऐब नहीं देखा। पर यह काम राजनीतिज्ञताके नहीं मूर्खताके स्मारक हैं। ऐङ्गलोइण्डियनोंको यह खयाल करनेका मगज नहीं है कि इन कामोंसे तथा कर्जन बहादुरकी निष्ठुर गालियोंसे भारतवासियोंका दिल कितना फट गया है। ऐङ्गलोइण्डियन उनसे मिलते नहीं इसीसे उनके दिलकी बातें जानते नहीं। अगर कर्जन बहादुरसे आधे दर्जन मनुष्य लगातार भारतके वैसराय होकर आवें तो ब्रटिश राज्यकी क्या दुर्गति होगी यह पहलेसे कहना कठिन है। हर एक भारतवासीको जो ब्रटिश राज्यका सच्चा भक्त है मालूम है कि लार्ड कर्जन हद्दसे ज्यादे जोशमें आकर ब्रटिश राज्यको भारतमें दृढ़ करने चले थे सो बेवकूफीसे उसके जिगरमें खञ्जर मार गये हैं। ऐङ्गलोइण्डियन यह सुनकर विश्वास नहीं करेंगे और हंसेंगे पर यह बिलकुल सत्य है। दुःख यही है कि ऐङ्गलोइण्डियन भारतमें रहकर भी भारतवासियोंके भाव वगैरह कुछ नहीं जानते। कारण यह है कि वह उनसे मिलते जुलते नहीं। अस्तु आओ हम सब प्रेमपूर्व्वक परमात्मासे प्रार्थना करें कि लार्ड मिण्टो न्याय

दया और सहानुभूतिका अक्सीर मरहम लगाकर भारत-वासियोंके जखमी जिगरको आराम करदें।

(११)

उपसंहार।

इस छोटीसी पुस्तकमें मैंने भारतवासियोंके कुछ मुख्य मुख्य दुःखोंकी तरफ अङ्गरेजों और ऐङ्गलोइण्डियनोंका केवल ध्यान आकृष्ट करनेकी चेष्टा की है। आशा है वहलोग इन बातों पर विचार करेंगे। अङ्गरेजी राज्यमें भारतवर्षही सबसे उज्वल रत्न है। यह स्वयं ही एक महादेश है जिसमें मानवजातिका पांचवां भाग वास करता है। यह परमात्मकी एक बड़ी भारी बहुरङ्गी कारीगरीका नमूना है। यहां भिन्न भिन्न रूप रङ्गके मनुष्य रहते हैं जिनकी पोशाकें और भी रङ्ग बिरङ्गी हैं। कहीं बर्फसे अच्छादित पर्वत हैं, कहीं सूर्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे तपती हुई ऊसर भूमि हैं, कहीं हरीभरी सुन्दर तराइयां है और कहीं हैं वन जिनमें बनैले जीवजन्तु तथा कीड़े मकोड़े मजेमें वास करते हैं। कहीं यूरोपकी सी तीक्ष्ण ठण्डी हवा चलती है और कहीं अफ्रिकाकी सी प्रचण्ड लू। भूमिके नीचे धातुओंकी धारा बहती है। सारांश यह कि भारत भुवनमोहन है। इसके बिना इङ्गलैण्ड नासिका तथा दक्षिणकरपदहीन मनुष्यकी तरह होजायगा। हमारे ऐङ्गलोइण्डियन भाई अपनी बेवकूफी से इङ्गलैण्डका कहीं अङ्ग भङ्ग न कर डालें। याद रखो "जैसा कर्म्म वैसा फल।" दुर्भाग्यसे ऐसे ऐङ्गलोइण्डियन कम नहीं हैं जो हिन्दू मुसलमानों में फूटबैर रखनाही भारतके शासनका सबसे बढ़िया उपाय समझते हैं। यह नीति बड़े ओछेपनकी है। इससे थोड़ी देरके लिये फायदा होसकता है पर सदाके लिये नहीं। नदीकी धारको क्या कोई

काट सकता है ? तलवार मारनेसे जल उछलता है कटता नहीं झट दौड़कर मिल जाता है। भारत शासनका सबसे बढ़िया उपाय उसके निवासियोंको सुखी और सन्तुष्ट रखना है। उन्हें अपने समान समझो छोटा मत जानो। उन्हें अपना हिस्सेदार समझो मुखालिफ नहीं। उनके साथ कृपा और सभ्यताका बरताव करो। उनके साथ वैसाही सलूक करो जैसा तुम दूसरेसे अपने साथ कराया चाहते हो। भारतमें अङ्गरेजी राज्यकी नीव सदा वही होनी चाहिये जिसे वकील न्याय सुविचार तथा सुबुद्धि कहते हैं। लोभ, स्वार्थ और घमण्डका शासन बालूकी सी भीत है। इङ्गलैण्ड जो कुछ दे चुका है उसके लिये भारतवासी सचमुच कृतज्ञ हैं पर अभी बहुत कुछ देनेकी है।

नये सूबेके छोटेलाट मिस्टर (अब सर) फुलरने खूनखराबा तथा फौजफांटेसे प्रजाको धमकाया है। यह देखकर यहांके अङ्गरेजी राज्यके सब शुभचिन्तकोंको बड़ा दुःख हुआ है। जिस आदमीने ऐसा किया वह एक सूबेका बड़ा अफसर होनेके योग्य कदापि नहीं है। राजनीतिज्ञोंका माथा शान्त और स्थिर तथा हृदय उदार और सहानुभूतिपूर्ण होना दरकार है।

कुछ लोग स्वदेशी आन्दोलन पर व्यर्थ नाराज होते हैं। वह लोग भी जो इसके तरफदार बननेका दम भरते हैं इससे डरते हैं। स्वदेशी आन्दोलन से कुछ खराबी नहीं होगी। यह फीनियन * या निहलिस्ट † आन्दोलन नहीं है। यह तारीफके लायक आन्दोलन है। जब यह कानूनके अनुसार चलाया जाय

* आयरलैण्ड की सभा जो आयरलैण्ड से अङ्गरेजी राज्य उठा देनेकी चेष्टा करती थी।

† रूसकी एक सम्प्रदाय जो सबको तोड़ फोड़कर एक नया ढङ्ग चलाया चाहती है।

तो सरकारको इसकी तरफदारी जरूर करनी चाहिये। इससे भारतका भाग्योदय वाणिज्य व्यापार तथा शिल्पका विस्तार होगा। इसके द्वारा भारतवासी आत्मगौरव आत्मनिर्भरता और स्वार्थत्याग सीखेंगे। स्वदेशी आन्दोलन कैसे आरम्भ होगया यह जाननेकी कुछ जरूरत नहीं। इस आन्दोलनका उद्देश्य भारी, ऊंचा और अच्छा है। भारतवासियोंको धन और कष्टकी कुछ परवा न कर यह आन्दोलन जारी रखना चाहिये।

इस विपत्तिके समय भारत चौराहे पर है। भगवान हमारे शासकोंको सुबुद्धि सहिष्णुता उदारता और न्याय का सच्चा मार्ग बतादे जिससे राजा प्रजाका हृदय एक हो और भारतमें सदा यूनियनजैक (अङ्गरेजोंका झण्डा) उड़ सके।

इङ्गलैण्डके राजसिंहासनका भारतमें जितना मान है उतना अङ्गरेजी राज्यमें और कहीं नहीं है। सम्राट को जरा सी निन्दा जितनी ज्यादे बुरी भारतवासियोंको मालूम पड़ेगी उतनी और किसीको नहीं। भारतवासी सच्चे दिलसे सम्राटको प्यार करते हैं। वह लोग दिखावेकी या झूठी प्रीति नहीं करते। स्वर्गीया महारानी पर सबकी श्रद्धाभक्ति थी। उनके स्वर्गारोहण करने पर भारतवासियोंने गहरा शोक किया था। राज्याभिषेक-के कुछ पहले जब सम्राट सप्तमएडवर्ड बीमार होगये तो भारतकी प्रजाने सचमुच चिन्तित होकर उनके शीघ्र अच्छे होनेके लिये व्यग्रताके साथ परमात्मासे प्रार्थना की थी। वह स्वर्गीया महा-रानीकी जितनी भक्ति करते थे उससे न्यून सम्राट एडवर्डकी नहीं करते हैं। युवराजको भी वह हृदयसे चाहते हैं। युवराज और युवराज्ञीने परम राजभक्त प्रजाके देशमें पदार्पण किया था। बम्बई-वालोंने बड़े उत्साहसे उनका स्वागत किया। तमाम शहर खूब सजाया गया और खूब धूमधामको रोशनी की गई थी। बम्बई

महानगरी अपनी सुन्दर सजावटके कारण "मोहिनी" बन गई थी और युवराजके स्वागतके निमित्त प्रसन्न होकर मानो हंस रही थी। युवराजके भारतमें पदार्पण करनेकी खबर सुनकर लोग महीनों पहलेसे गद्गद होरहे थे! सबको यह भय था कि स्वागतमें बहुत धूमधाम करनेसे युवराजको भारतके बहुत धनी होनेका शायद सन्देह न होजावे पर तौभी इन बातोंका कुछ खयाल न कर तूमतराकके साथ उनका उचित स्वागत करना स्थिर हुआ।

युवराजने बड़े नगरोंमें अपने स्वागतके लिये जो ठाठबाट देखा है उपाकर उसीसे वह देशकी धन सम्पत्तिका अन्दाजा न करें। यहांके किसान दरिद्र हैं और भूखों मरते हैं। इनको संख्या सैकड़े पोछे अस्सी है। इतने पर भी धनी दरिद्र राजा प्रजा, सेठ साहूकार, छोटे बड़े सबने मिलकर यह कामना की कि युवराजका समय आनन्दसे यहां बोते और वह सकुशल स्वदेश लौट जायं।

भारतवासियोंकी सम्राटके ऊपर जो भक्ति है वह राजनीतिकी एक बड़ी जायदाद है। उसका उपयोग अच्छी तरह होना चाहिये। यहां वालोंकी बुद्धि तीक्ष्ण है यहांकी भूमि उर्वरा है और यहां धनोपार्जनके उपाय बहुत हैं। होशियार कुम्हार इन मसालोंसे अत्यन्त सुन्दर तथा बड़े कामका बर्तन बना सकता है। अच्छे अच्छे राजनीतिज्ञ, सिपाही, कानून जाननेवाले सच तो यह है कि अच्छेसे अच्छा सब कुछ भारतसे पैदा कराया जासकता है और वह पैदा कर देगा। इसपर कुछ ऐङ्गलोइण्डियन हंस सकते हैं और इसे खयाली पुलाव समझ सकते हैं। लेकिन उन्हें जापानकी तरफ देखना चाहिये। तीस वर्ष पहले अगर कोई आदमी कहता कि जापान रूसको जीतकर संसारकी समस्त सभ्य जातियोंके समाजमें ऊंचास्थान पावेगा तो लोग उसे पागल समझते। दस वर्ष पहले किसने सोचा था कि रूसकी

जबरदस्त हथियार कुण्ठित होजायेंगे और वह अपने घरके भयानक झगड़े ही में बम बोल जायगा। जुल्म जबरदस्ती तथा बुरे शासनने घृणा और प्रतिहिंसाका बीज प्रजाके हृदयमें बो दिया था। सङ्गीन तथा तलवारें प्रजाके शरीरमें घुसेड़ी जानेके लिये सदा तैयार रहती थीं। प्रजा क्रोधसे जल उठी थी लेकिन मौका देख रही थी। इतनेमें अचानक रूसजापानका युद्ध चल पड़ा। इससे प्रधूमित अग्नि प्रज्वलित हो उठी। वह अब भी धधक रही है। इसके बुझानेके लिये मनुष्योंका घड़ों खून डाला गया पर कुछ फायदा न हुआ। आशा दुराशा मात्र हुई। प्राचीन समयमें ऐसे मौकेपर और और देशोंने जो घटनाएं देखी थीं वह रूसने भी देख ली। लोग इतिहास पढ़ते हैं पर दुर्भाग्यसे उसके सुन्दर उपदेशोंको हृदयमें धारण नहीं करते। ईश्वरका नियम कभी मिट नहीं सकता है। तथापि शाहनशाह और राजनीतिज्ञ लोग अपनी अपनी परिमित बुद्धिके सामने ईश्वरके नियमको कुछ गिनते ही नहीं बस इसीसे अपना काल आप बुलाते हैं। न्याय राज्यको ऊंचा करता है अत्याचार नीचे गिराता है। यह बात हर एक प्रान्त और देशके लिये है। अपने बुरे शासनका फल रूस भोग रहा है। भारतवासी सदासे रूसको अपना बड़ा शत्रु समझते हैं। वह भगवानको धन्यवाद देते हैं कि वह रूसके राक्षसी तथा अत्याचारी शासनके अधीन न रहकर स्वतन्त्रताप्रिय दयालु अङ्गरेजोंकी छत्रछायामें हैं। इन सब त्रुटियोंके रहते भी भारतवासी अङ्गरेजी राज्य पसन्द करते हैं। यह कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। भारतवर्ष संसारके बहुतसे उलट पलट देख चुका है। इसके ऐसी बिषम यातनायें किसी देशने नहीं भोगी हैं। भारतरूपी जहाजके अग्रभागने विदेशी आक्रमणकी प्रचण्ड वायु तथा उत्तालतरङ्गोंके थपेड़े बेतरह खाये थे और आपसकी

लड़ाईसे इसके अञ्जर पञ्जर ढीले होगये थे। भगवानने इस जहाजका भार चतुर कर्णधार जोनबुल (अङ्गरेजजाति) के हाथ सौंपा है। आशा है वह इसको इसी इस लक्ष्यस्थानको तरफ ले जायगा और संसारभरसे प्रशंसा लाभ करेगा।

लोग कहते हैं कि पूर्व्व पूर्व्व ही रहेगा और पश्चिम पश्चिम ही। दोनों का आपसमें कभी हेलमेल नहीं होगा। ऐङ्गलोइण्डियन, प्रजा तथा राजनीति विशारदगण भारतवासियोंसे हाथ मिला तथा उनके साथ देशको भलाईके काम कर, इस बातको झूठ साबित करदें और सुविशाल अङ्गरेजी साम्राज्य का नाम यश बढ़ा दें। इति।

परिशिष्ट।

(क)

* मु.फस्सिल के मजिस्ट्रेट।

जिन लोगोंको वकील, मुद्दई, मुद्दालह या गवाहकी हैसियतसे मुफस्सिलके मजिस्ट्रेटोंको अदालतोंमें हाजिर होनेका मौका पड़ता है उन्हें बड़ी बड़ी तकलीफें उठानी पड़ती हैं। वह लोग तो हुक्मके मुताबिक दिनके ११ बजे ही हाजिर होजाते हैं पर साहब बहादुरका कहीं पता नहीं रहता है। यह बात सब लोग जानते हैं कि मुफस्सिलमें मजिस्ट्रेटको जब मौज आती है या जब उनका सुभीता होता है तब इजलास करते हैं। अगर कहीं शासनका कार्य्य उनके हाथमें हुआ तो पहले वह मालका काम देखते हैं और पीछे फौजदारीका। या मौज आगई तो फौजदारीका काम पहले भी देख लेते हैं। अगर मालका काम पहले देख लिया तो बस वकील और मुद्दई मुद्दालहोंकी ग्रहदशा आजाती है। लाचार बेचारोंको घण्टों किसी तरह इन्तजारी करनी पड़ती है। जिन्हें मुफस्सिलके मजिस्ट्रेटोंके इजलास पर जानेका कभी मौका नहीं पड़ा है वह इन तकलीफों को अनुभव नहीं कर सकते हैं। मालका काम करते समय साहब बहादुर फरमाते हैं कि यह कमरा मेरा प्राइवेट रूम है। लेकिन जब वही फौजदारी मुकद्दमे सुनते हैं तो उस कमरे का कुछ ढङ्ग बदल नहीं जाता है। बेचारे वकीलोंको लाचार होकर बरण्डेमें या और कहीं समय बिताना पड़ता। अगर वह इन्तजारीसे थककर चुपके चुपके मजिस्ट्रेटको कोसते हों तो आश्चर्य्यही क्या है? गवाहों

---

* यह चिट्ठी "बम्बई गजट" में "एक वकील" के नामसे छपी थी।

और मुद्दई मुद्दालहोंकी तो और भी खुवारी है। वह लोग शायद शोरगुल करके श्रीमानके दिमागको कहीं परेशान न कर दें इसलिये चपरासी उन बेचारोंको बरण्डेपर या उसके आसपास भी ठहरने नहीं देते। अतएव उन्हें किसी पेड़के नीचे जमीनपर बैठना पड़ता है या इधरसे उधर टहलमारते फिरना पड़ता है। यदि दुर्दिन हुआ तो उनके कष्टका अनुभव पाठक स्वयं कर लें। साहब बहादुर जब सफरमें जाते हैं तब तो कष्टका ठिकाना नहीं रहता है। श्रीमानका तम्बू कभी कभी स्टेशन तथा शहरसे मीलों दूर खड़ा होता है। इलाका बड़ा होनेके कारण दूर दूरके लोगों को सफरी अदालतमें पहुंचना पड़ता है। बेचारोंको मुकद्दमेकी तारीखसे एक दिन पहले या उस दिन बड़े तड़के घरसे निकलना पड़ता है। तम्बूके आस पास न कोई चीज खाने को मिलती है और न पोनेको। पानीके लिये किसी चपरासीकी खुशामद करनी पड़ती है या और किसीका मुंह देखना पड़ता है। जब साहबकी मौज आई तब मुकद्दमा पेश हुआ नहीं तो बेचारे गर्मीके मौसिममें किसी पेड़के नीचे वह कष्टकर समय बिताते हैं। मैं कई बार देख चुका हूं कि साहब बहादुर ५ बजे शामसे पहले मजिस्ट्रेटीका काम हाथमें नहीं लेते हैं। मुकद्दमेवालों वकीलों और गवाहोंके सुभीतेके लिये फौजदारी इजलास चाहे सदरमें हो चाहे सफर में ११ बजे सबेरे बैठना चाहिये और पांच बजे शामको उठना चाहिये। हां, किसी जरूरी मुकद्दमेमें कभी पांच बजेके बाद भी काम करना वाजिब है लेकिन जब लोग दिन भरकी मिहनतसे थककर घर वापिस जाते हैं तब पांच बजे मुकद्दमा पेश करना कभी वाजिब नहीं। मुफस्सिलके मजिस्ट्रेट अपनेको नवाब समझते हैं। वह जानते हैं कि हमें सब समय सब दिन सरकारी छुट्टियों में भी इजलास

करनेका इख्तयार है। इन बातोंसे लोगों को कितना कष्ट होता है इसका वह जरा भी खयाल नहीं करते। सदर मुकाममें भी देरसे मुकद्दमा पेश होता है और मुद्दई मुद्दालह तथा गवाहों को घरसे बाहर नई जगहमें रात काटनी पड़ती है। ऐसी ऐसी बातें मैं बहुतसी बतला सकता हूं।

मुकद्दमा लड़नेवालों को तकलीफ बस यहीं खतम नहीं है। वास्तवमें रुपये पैसेकी जेरबारी जो उठानी पड़ती है अगर उसको गिनती न की जाय तो उनके दुःखकी कहानी अधूरी रह जायगी। उन्हें खर्चकी जेरबारी उठानी पड़ती है। यानी वकीलोंकी मुट्ठी गरम करनी पड़ती है। इसके बाद गवाहों का नम्बर है। सरकारमें गवाहोंके लिये जो भत्ता जमा किया जाता है उसके अलावे उनकी और भी पूजा की जाती है। जो गवाह हैरानी परेशानीसे जी चुराते हैं उनकी सेवा सुश्रूषा करनी पड़ती है। जो गवाह बिना मरजी बुलाये जाते हैं वह अकसर बहुत नांक भौं सकोड़ते हैं और अन्तको जिसकी तरफसे जाते हैं उसका मुकद्दमा जान बूझकर बिगाड़ देते हैं।

मुफस्सिलके मजिष्ट्रेटकी अदालतमें मुकद्दमाबाज लोग जो कष्ट उठाते हैं उसका यह एक छोटासा खाका है। यह दुःखकी बात है कि ऊपर कहे हुए कष्टोंके कर्त्ता अधिकतर युरोपियन मजिष्ट्रेट ही हैं। उनकी नकल उनके क्लार्क (मुहर्रिर) करते हैं जो कुछ दिनों के बाद मजिष्ट्रेट हो जाते हैं। यह दस्तूर सबसे बुरा है। देशी मजिष्ट्रेटों को युरोपियन मजिष्ट्रेटके से सद्गुण प्राप्त किये बिना भी अंकड़ते देखकर हर्ष विषाद दोनों मालूम होते हैं।

हाइकोर्टके जज दिनके ११ बजे इजलास पर बैठते हैं और पांच बजे उठ जाते हैं। दोपहरको घण्टा पौन घण्टा आराम भी

करते हैं। फिर मुफस्सिलके मजिष्ट्रेट इस रूलके पाबन्द क नहीं हैं? हां, यह सच है कि कुछ मजिष्ट्रेटोंको अपने काम सिवा मालका काम भी देखना पड़ता है। पर यह को कारण नहीं है कि शासनका काम चार पांच बजे शा या उसके बाद हाथमें लिया जावे। सबसे अच्छी बात य है कि मजिष्ट्रेट लोग शासन या विचारका काम पहले दे और कुछ देरके बाद मालका काम। अगर यह असम्भव हो (मैं नहीं समझता कि यह क्यों असम्भव होगा) तो फौजदारी मुकद्दमे सदा दो बजेसे पांच बजे तक सुने जायं और इसमें कभी देर न हो। सम्मन सफोनोंमें हाजिरीका समय बदल दिया जावे।

जिन मजिष्ट्रेटोंके सिरपर मालके कामोंका बोझ नहीं है उन्हें ११ बजेके बादसे पांच बजेतक इजलास करनेमें क्या आफत है? मैं कुछ मजिष्ट्रेटोंको जानता हूं जो छोटे छोटे मामलोंमें आठ बजे रात तक इजलाससे नहीं उठते। इससे वकील तथा फरीकोंको बड़ी तकलीफ होती है। उन मजिष्ट्रेटोंको भी मैं जानता हूं जो सबेरे साढ़े सात बजे कचहरी करते हैं। मैं पूर्ण आशा से यह चिट्ठी समाप्त करता हूं कि सरकार और हाइकोर्टके जज तथा चीफ जस्टिस महोदय इसपर कृपा कर विचार करेंगे।

परिशिष्ट।

(ख)

मुफस्सिलके मजिष्ट्रेट।

तारीख १२ जनवरीके नम्बर (बम्बे गजट) में "मुफस्सिलके मजिस्ट्रेट" शीर्षक मेरा एक लेख छप चुका है। उसीका यह अवशिष्ट है। आज उन मजिष्ट्रेटोंके चुनावके विषयमें कुछ लिखता हूं। देशी मजिष्ट्रेट लोग अधिकांश पहले सब डिविजनल अफसर या जिला मजिष्ट्रेटके क्लर्क (मुहर्रिर) होते हैं। उनको क्लर्कसे मजिस्ट्रेट होजाना अद्भुत खेल है। १५,२०) महीनेकी क्लर्कीसे वह तीसरे दरजेके मजिस्ट्रेट होजाते हैं और फिर धीरे धीरे मौका पाकर दूसरे तथा अव्वल दरजेके मजिष्ट्रेटके पदपर पहुंच जाते हैं। उनके मजिष्ट्रेट होने में जोरसे बाधा नहीं दी जा सकती है किन्तु शिक्षा दीक्षाके खयालसे वह इस पदके योग्य नहीं होते हैं। इन क्लर्कोंको 'अति' का बड़ा शौक रहता है। इस बातकी शिकायत अकसर सुनी जाती है। कुछ दिनोंके बाद यह अयोग्यता उनके स्वभावमें ऐसी घुल मिल जाती है कि मजिष्ट्रेट होनेपर अधिक प्रलोभन देखकर उन्हें अपनी अयोग्यता दूर करना कठिन पड़जाता है। सिवा इसके क्लर्की करनेके समय वह खुशामदियों और हां में हां मिलाने वालोंमें पलते हैं। उन्हें न कभी सन्तोष होता है और न वह होनेकी आशा करते हैं। इस अवस्था में वह अपने दोस्तों और जाति भाइयोंकी खुशामद और सुफारिशमें फंस जाते हैं जिनमेंसे किसी किसीको तो इसीसे रोटी चलती है।

यह सब कोई जानते हैं कि दूसरे और तीसरे दरजेके मजिष्ट्रेटोंको तनखाह अकसर बहुत कम होती है इससे ह लोभको

रोक नहीं सकते हैं। दूसरे दरजेवाले अस्सी रुपये महीनेसे अधिक नहीं पाते हैं। जिस श्रेणीके लोग मजिष्ट्रेट बनाये जाते हैं उनको बात मैं छोड़ देता हूं लेकिन इतनो कम तलबके आदमीके हाथ प्रजाकी स्वाधीनतापर इतना बड़ा अधिकार सौंपना बड़े खतरे का काम है। जाबतए फौजदारीके मुताबिक दूसरे दरजेके मजिष्ट्रेटों को छः महीने की जेल और २००) जुरमाना करने का अधिकार दिया गया है। इसके सिवा बेंतकी सजा है अगर खासकर इसके लिये अधिकार दिया गया हो तो। तीसरे दरजेके मजिष्ट्रेटोंकी बस एक महीनेकी कैद और ५०) जुरमाना करनेका अधिकार है।

इन मजिष्ट्रेटोंकी शिक्षाके बारेमें मैं कह सकता हूं कि उनकी शिक्षा अत्यन्त अल्प होती है। यह सच है कि वह अपने ग्रेडकी निम्न परीक्षायें सदा पास करलेते हैं और उच्चपरीक्षायें भी अकसर पास करते हैं। तथापि मैं कहता हूं कि कलक्टरीके कामसें चाहे वह कैसे हो हों पर मजिष्ट्रेटोके काममें तो प्रायः सबही निकम्मे होते हैं। उनकी विद्या कूएंके मेंढककी सी होती है। अगरचे वह ताजीरातहिन्द और जाबितएफौजदारीको सब दफाओंके जानकार बनते हैं पर वह यह अच्छी तरहसे नहीं जानते कि कौन दफा कहां और कैसे लगती है। कानून शहादतसे तो वह बिलकुल कोरे होते हैं। वह उपयुक्त (माकूल) अनुपयुक्त (नामाकूल) मुख्य (अव्वल) और गौण (दोयम) गवाहियोंके फर्कको नहीं समझते। एवीडेन्स ऐक्टकी १६५ दफाके अनुसार जो बड़ा अधिकार दिया गया है उसका वह कुव्यवहार करते हैं। इससे जिस कामके लिये वह दफा चलाई गई थी वह पूरा नहीं होता है। जब कभी संयोगसे मुकद्दमींमें कानूनकी जुदी जुदी दफाओंके गूढ़ प्रश्न आजाते हैं तो वह घबरा उठते हैं। सिर्फ

जाबिताफौजदारीका उनको थोड़ासा इल्म होता है। न्याय करनेके हेतु मजिस्ट्रेटोंको मेरी समझसे कानूनकी सब शाखाओंका साधारण ज्ञान होना चाहिये और मजिष्ट्रेट होनेके पहले कुछ दिनों तक विकालत कर लेना चाहिये। सदरआला नियत करनेके समय तो सरकार इस शर्तको पूरा करनेकी तरफ ध्यान रखती है लेकिन जिन मजिष्ट्रेटोंकी शक्ति प्रजाकी स्वतन्त्रता पर सीधे असर पहुंचाती है उनके लिये यह शर्त क्यों नहीं काममें लाती है ?

परिशिष्ट ।

(ग)

तालिका ।

(माननीय गोखले महोदय द्वारा संग्रहीत)

(१) टेलीग्राफ विभाग ।

ग्रेड्स (दरजा) रुपया	गोरे और अधगोरे	भारतवासी
२००)—३००)	९८	१२
३००)—४००)	७२	४
४००)—६००)	३०	२

इस विभागमें ६००) महीनेसे लेकर ३५००) महीनेकी ३७ नौकरियां हैं जो सब गोरों को मिली हैं ।

(२) स्टेटरेलवे विभाग ।

२००)—३००)	२८७	६३
३००)—४००)	१४०	२३
४००)—५००)	८९	११
५००)—६००)	४२	३
६००)—८००)	८४	६

इस विभागमें ८००) से २०००) महीनेके ११९ पद हैं जो खाली गोरों और अध गोरों को मिली हैं ।

(३) पोस्टग्रोफिस विभाग ।

ग्रेड्स (दरजा) रुपया	गोरे और अध गोरे	भारतवासी
२००)—३००)	६१	५३
३००)—४००)	३०	१८
४००)—५००)	२६	३
५००)—१०००)	१७	.१
१०००)—३५००)	१०	१

केवल एक ही भारतवासी जो सिविलियन था सन १९०३ ई० में २०००) से २५००) के ग्रेड में पहुंचा था। अब वह डाक विभागमें है भी नहीं ।

शासन कार्य्य विभाग ।

	१८९७ ई०	१९०३ ई०
५००) से ऊंची तलब की नोकरियां	२३४	२४८+१४
गोरे	१८८	१९७+८
अधगोरे	१६	२४+८
हिन्दू	२८	२५—३
मुसल्मान	१	२+१

कृषि विभाग (नई सृष्टि)

जोड़	०	३
गोरे	०	३
अधगोरे	०	०
हिन्दू	०	०
मुसल्मान	०	०

आरकिग्रोलोजी (पुरातत्व विज्ञान)

जोड़	०	७
गोरे	०	६
अधगोरे	०	०
हिन्दू	०	१
मुसल्मान	०	०

टैक्स विभाग

जोड़		२	२
	गोरे	१	१
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	१	१
	मुसलमान	०	०

बोटेनिकल सरवे (विभाग)

जोड़		१	० ।
	गोरे	१	० ।
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

सिविल वेटनरी (विभाग)

जोड़		१०	१२+२
	गोरे	१०	१२+२
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

कस्टम (कर)

जोड़		३४	३८+४
	गोरे	२७	३१+४
	अधगोरे	४	५+१
	हिन्दू	१	१—२
	मुसलमान	०	१+१

एकोनमिक प्रोडक्टस्

जोड़	१	२+१
गोरे	१	२+१
अधगोरे	०	०
हिन्दू	०	०
मुसलमान	०	०

शिक्षाविभाग

जोड़	१४५	१४२—३
गोरे	११७	११४—३
अधगोरे	१	४+३
हिन्दू	२४	२३—१
मुसलमान	३	१—२

१८८७ ई० में १०००) महीनेकी ३८ नौकरियां थीं वह सब गोरों को थीं। १९०३ में ४९ नौकरियों में से ४८ गोरों को और १ हिन्दू को मिली।

आबकारी विभाग

जोड़	५	७+२
गोरे	२	५+३
अधगोरे	०	०
हिन्दू	३	२—१
मुसलमान	०	०

फौरेन—बिभाग

जोड़	९	१०+१
गोरे	८	८
अधगोरे	०	१+१
हिन्दू	०	०
मुसलमान	१	१

फौरेस्ट विभाग (बन)

जोड़		१३५	१३७+२
	गोरे	१३४	१३६+२
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	१	१
	मुसलमान	०	०

जियोलोजिकल सरवे

जोड़		१०	११+१
	गोरे	८	८+१
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	२	२
	मुसलमान	०	०

इम्पोरियल सर्विस ट्रूप्स

जोड़		१०	१५+५
	गोरे	१०	१५+५
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

इण्डियन म्यूजियम (अजायब घर)

जोड़		२	३+१
	गोरे	२	३+१
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

	जेल		
जोड़		३७	४५+८
	गोरे	३७	४१+४
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	४+४
	मुसलमान	०	०
	जुडीशियल		
जोड़		४५०	४५६+६
	गोरे	२४६	२३६—१०
	अधगोरे	१५	१३—२
	हिन्दू	१५५	१७३+१८
	मुसलमान	३४	३४
	लेण्ड रेविन्यू		
जोड़		८२६	८९९+७३
	गोरे	५८५	६५३+६८
	अधगोरे	२८	१५—१३
	हिन्दू	१८४	१८०—४
	मुसलमान	३८	५१+१३
	मेडिकल (सिविल)		
जोड़		१९४	१९३—१
	गोरे	१८२	१८२
	अधगोरे	२	१—१
	हिन्दू	१०	१०
	मुसलमान	०	०

मिटग्रोरोलोजी (वायुविज्ञान)

जोड़		२	४ + २
	गोरे	२	४ + २
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

मिलिटरी एकाउण्टस्

जोड़		९	१४ + ५
	गोरे	४	९—५
	अधगोरे	५	५
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

मिलिटरी ऐड्मिनिस्ट्रेशन

जोड़		३	६ + ३
	गोरे	१	३ + २
	अधगोरे	२	३ + १
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

माइन्स् (खान)

जोड़		१	३ + २
	गोरे	१	३ + २
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

मिण्ट और एसे

जोड़		८	११+२
	गोरे	८	१०+२
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	१
	मुसलमान	०	

मिस लेनियस्

जोड़		२	५+३
	गोरे	२	५+३
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

पोलिटिकल

जोड़		१३४	१३८+५
	गोरे	१३१	१३४+३
	अधगोरे	१	१
	हिन्दू	०	२+२
	मुसलमान	२	२

पोर्ट ब्लेयर

जोड़		७	७
	गोरे	७	५—२
	अधगोरे	०	१+१
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	१+१

पोष्ट आफिस

जोड़	२५	२८+४
गोरे	२२	२७+५
अधगोरे	०	०
हिन्दू	३	२+१
मुसलमान	०	०

पबलिक वर्कस्

जोड़	४३५	४०४—३१
गोरे	३६१	३२२—३८
अधगोरे	२०	२३+३
हिन्दू	५२	५७+५
मुसलमान	२	२

इस विभाग में १२००) रुपये मासिक से ऊपर की नौकरियां १८८७ में ४० थीं और १९०३ में ६१ जो सब गोरों को मिली हैं।

ओपियम (अफीम विभाग)

जोड़	३२	४४+१४
गोरे	३१	४१+१०
अधगोरे	१	१
हिन्दू	०	१+१
मुसलमान	०	१+१

ऑर्ड्नैन्स्

जोड़	९	१६+७
गोरे	९	१६+७
अधगोरे	०	०
हिन्दू	०	०
मुसलमान	०	०

पिलट सर्विस

जोड़		१२	२१+८
	गोरे	१२	२१+९
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

पुलिस

जोड़		३२८	३२८—१
	गोरे	३२१	३२१
	अधगोरे	४	२—२
	हिन्दू	३	३
	मुसलमान	१	२+१

रैजिष्ट्रेशन

जोड़		६	३—३
	गोरे	१	१
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	४	२—२
	मुसलमान	१	०—१

रायल इण्डियन मैरीन्

जोड़		१४	१४
	गोरे	१४	१४
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसलमान	०	०

सौल्ट (निमक)

जोड़		३४	३८+४
	गोरे	३२	३५+३
	अधगोरे	२	२
	हिन्दू	०	१+१
	मुसल्मान	०	०

सायण्टिफिक और माइनडिपार्ट मेण्ट्स

जोड़		२	२
	गोरे	२	२
	अधगोरे	०	०
	हिन्दू	०	०
	मुसल्मान	०	०

टैम्पस

जोड़		४	५+१
	गोरे	२	२
	अधगोरे	१	०—१
	हिन्दू	१	३+२
	मुसल्मान	०	०

स्टेट रेलवे

जोड़		२७४	२५४—२०
	गोरे	२५३	२२१—३२
	अधगोरे	१३	२४+११
	हिन्दू	८	९+१
	मुसल्मान	०	०

टिप्पणी:—१८८७ ई० में इस विभाग में १२००) मासिक के २८ पद थे जो सब गोरों को मिले थे; १९०३ में ३४ पद थे जिनमें ३२ गोरों को और २ अध गोरों को मिले थे।

ष्टेशनरी और प्रिण्टिंग

जोड़	८	८—१
गोरे	७	७
अधगोरे	१	१
हिन्दू	१	०
मुसल्मान	०	०

सप्लाइ और ट्रैन्सपोर्ट

जोड़	३	२—१
गोरे	३	२—१
अधगोरे	०	०
हिन्दू	०	०
मुसल्मान	०	०

सर्वं

जोड़	४६	४२—४
गोरे	३७	२९—८
अधगोरे	९	१३+४
हिन्दू	०	०
मुसल्मान	०	०

ग्रहण दर्पण।

आप किसी गांव या शहर में हों घर बैठे ग्रहण के लगने और मोक्ष होने का ठीक ठीक समय निकाल लीजिये। इसकी रीति अधिक क्लिष्ट नहीं है। गुणा भाग जाननेवाला हल कर सकता है।